

 **AstroSage**

World's No. 1 Astrology Portal & App

कीमत: ~~\$ 10~~ मुफ्त

अवकहडा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित)	स्वर्ण
वर्ण	क्षत्रिय
योनी	अश्व
गण	देव
वश्य	चतुष्पद
नाड़ी	आदि
दशा भोग्य	Ket 3 Y 0 M 11 D
लग्न	वृश्चिक
लग्न स्वामी	मंगल
राशि	मेष
राशि स्वामी	मंगल
नक्षत्र-पद	अश्विनी 3
नक्षत्र स्वामी	केतु
जुलियन दिन	2451887
सूर्य राशि (हिन्दू)	वृश्चिक
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	023.52.10
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.21
साम्पातिक काल	10.16.47

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	5
शुभ अंक	2, 7, 9
अशुभ अंक	4, 8
शुभ वर्ष	14,23,32,41,50
भाग्यशाली दिन	गुरु
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, चंद्र
मित्र राशियां	मिथुन, सिंह, धनु
शुभ लग्न	कर्क, तुला, धनु, कुंभ
भाग्यशाली धातु	सुवर्ण
भाग्यशाली रत्न	लाल, मूंगा

व्यक्ति विवरण

लिंग	Female
दिनांक	8 : 12 : 2000
समय	5 : 29 : 15
दिन	शुक्रवार
इष्टकाल	056-12-36
जन्म स्थान	Palwal
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	28 : 9 : N
रेखांश	77 : 20 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:20:40
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	5:8:35
जन्म समय – जीएमटी	23:59:15
तिथि	द्वादशी
हिन्दू दिन	गुरुवार
पक्ष	शुक्ल
योग	वरीयान
करण	भाव
सूर्योदय	07:00:12
सूर्यास्त	17:25:03
दिन अवधि	10:24:51

घटक (अशुभ)

दिन	रवि
करण	बव
लग्न	मेष
माह	कार्तिक
नक्षत्र	मघा
प्रहर	1
राशि	मेष
तिथि	1, 6, 11
योग	विषकुम्भ
ग्रह	बुध

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

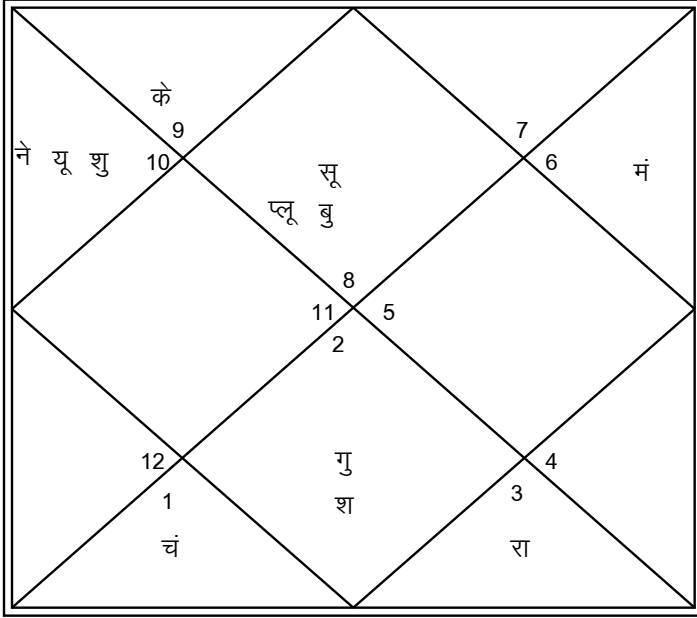
फ्री कंसल्टेशन



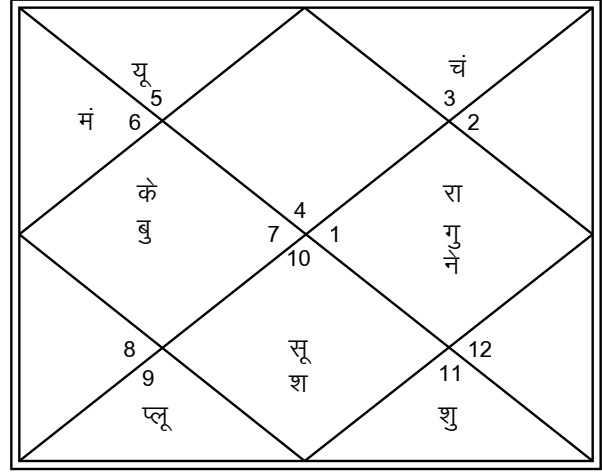
पारम्परिक

नाम	Lovely	जुलियन दिन	2451887	लग्न स्वामी	मंगल	दशा भोग्य	Ket 3 Y 0 M 11 D
लिंग	Female	अयनांश नाम	लाहिरी	लग्न	वृश्चिक	करण	भाव
दिनांक	8.12.2000	अयनांश	023.52.10	योग	वरीयान	नक्षत्र स्वामी	केतु
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Palwal	तिथि	द्वादशी	नक्षत्र-पद	अश्विनी-3
समय	5.29.15	रेखांश	77.20.E	सूर्यास्त	17.25.03	राशि स्वामी	मंगल
साम्पातिक काल	10.16.47	अक्षांश	28.9.N	सूर्योदय	07.00.12	राशि	मेष

लग्न चक्र



नवमांश चक्र



विंशोत्तरी दशा

केतु -7 वर्ष 8/12/00 से 19/12/03	
केतु	00/00/00
शुक्र	00/00/00
सूर्य	00/00/00
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	7/12/00
गुरु	13/11/01
शनि	22/12/02
बुध	19/12/03

शुक्र -20 वर्ष 19/12/03 से 19/12/23	
शुक्र	19/4/07
सूर्य	19/4/08
चंद्र	19/12/09
मंगल	19/2/11
राहु	19/2/14
गुरु	19/10/16
शनि	19/12/19
बुध	19/10/22
केतु	19/12/23

सूर्य -6 वर्ष 19/12/23 से 19/12/29	
सूर्य	7/4/24
चंद्र	7/10/24
मंगल	13/2/25
राहु	7/1/26
गुरु	25/10/26
शनि	7/10/27
बुध	13/8/28
केतु	19/12/28
शुक्र	19/12/29

चंद्र -10 वर्ष 19/12/29 से 19/12/39	
चंद्र	19/10/30
मंगल	19/5/31
राहु	19/11/32
गुरु	19/3/34
शनि	19/10/35
बुध	19/3/37
केतु	19/10/37
शुक्र	19/6/39
सूर्य	19/12/39

मंगल -7 वर्ष 19/12/39 से 19/12/46	
मंगल	16/5/40
राहु	4/6/41
गुरु	10/5/42
शनि	19/6/43
बुध	16/6/44
केतु	13/11/44
शुक्र	13/1/46
सूर्य	19/5/46
चंद्र	19/12/46

राहु -18 वर्ष 19/12/46 से 19/12/64	
राहु	1/9/49
गुरु	25/1/52
शनि	1/12/54
बुध	19/6/57
केतु	7/7/58
शुक्र	7/7/61
सूर्य	1/6/62
चंद्र	1/12/63
मंगल	19/12/64

गुरु -16 वर्ष 19/12/64 से 19/12/80	
गुरु	7/2/67
शनि	19/8/69
बुध	25/11/71
केतु	1/11/72
शुक्र	1/7/75
सूर्य	19/4/76
चंद्र	19/8/77
मंगल	25/7/78
राहु	19/12/80

शनि -19 वर्ष 19/12/80 से 19/12/99	
शनि	22/12/83
बुध	1/9/86
केतु	10/10/87
शुक्र	10/12/90
सूर्य	22/11/91
चंद्र	22/6/93
मंगल	1/8/94
राहु	7/6/97
गुरु	19/12/99

बुध -17 वर्ष 19/12/99 से 19/12/16	
बुध	16/5/02
केतु	13/5/03
शुक्र	13/3/06
सूर्य	19/1/07
चंद्र	19/6/08
मंगल	16/6/09
राहु	4/1/12
गुरु	10/4/14
शनि	19/12/16

ग्रह स्थिति				
ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	वृश्चिक	01.54.57	विशाखा	4
सूर्य	वृश्चिक	22.20.41	ज्येष्ठा	2
चंद्र	मेष	07.33.44	अश्विनी	3
मंगल	कन्या	26.50.12	चित्रा	2
बुध	वृश्चिक	12.33.53	अनुराधा	3
गुरु (व)	वृषभ	10.55.35	रोहिणी	1
शुक्र	मकर	05.42.41	उषादा	3
शनि (व)	वृषभ	02.10.09	कृतिका	2
राहु (व)	मिथुन	23.05.12	पुनर्वसु	1
केतु (व)	धनु	23.05.12	पूर्वाषाढा	3
यूरे	मकर	23.52.00	धनिष्ठा	1
नेप	मकर	10.38.09	श्रवण	1
प्लू	वृश्चिक	18.56.04	ज्येष्ठा	1

अष्टकवर्ग तालिका												
राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	3	5	4	4	6	4	2	4	5	4	4
चंद्र	5	5	4	3	4	6	4	4	1	5	4	4
मंगल	5	1	3	1	4	5	2	3	3	4	3	5
बुध	6	4	3	4	4	6	4	5	4	4	4	6
गुरु	4	5	4	6	5	6	4	5	6	1	6	4
शुक्र	3	3	3	5	4	6	2	4	4	6	6	6
शनि	3	1	5	3	4	6	3	4	2	2	4	2
योग	29	22	27	26	29	41	23	27	24	27	31	31

चलित तालिका				
भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	तुला	17.59.14	वृश्चिक	01.54.57
2	वृश्चिक	17.59.14	धनु	04.03.31
3	धनु	20.07.48	मकर	06.12.04
4	मकर	22.16.21	कुंभ	08.20.38
5	कुंभ	22.16.21	मीन	06.12.04
6	मीन	20.07.48	मेष	04.03.31
7	मेष	17.59.14	वृषभ	01.54.57
8	वृषभ	17.59.14	मिथुन	04.03.31
9	मिथुन	20.07.48	कर्क	06.12.04
10	कर्क	22.16.21	सिंह	08.20.38
11	सिंह	22.16.21	कन्या	06.12.04
12	कन्या	20.07.48	तुला	04.03.31

॥ आपका लग्न ॥

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पड़ती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **वृश्चिक**

स्वास्थ्य वृश्चिक लग्न के लिए:

वृश्चिक लग्न का होने के कारण आपको प्रजनन अंगों, नाक और नाक की हड्डियों, हिमोग्लोबीन और जननांग से सम्बंधित रोगों से पीड़ा हो सकती है। इसके अलावा आपको प्रजनन और पेशाब की समस्या, जिगर और गुर्दे के रोग भी परेशान कर सकते हैं। वृश्चिक लग्न आपको बवासीर और अल्सर जैसे रोग की दिक्कतें दे सकते हैं।

स्वभाव व व्यक्तित्व वृश्चिक लग्न के लिए:

वृश्चिक लग्न के लोग स्वयं की आलोचना में विश्वास, एकाग्रता और अपने काम के प्रति लगनशील होते हैं जिसमें आपको या तो पूरी तरह सफलता मिलती है या आप पूरी तरह से असफल रहते हैं। आप छोटी बातों पर भी भड़क जाते हैं जो आपको काफी नुकसान पहुंचा सकता है। आप कभी कभी अपने करीबी पर शंका और उनके प्रति ईर्ष्या रखते हैं। आपकी भावनात्मक शक्ति आपको मनचाहे क्षेत्रों में अपना कैरियर बनाने में काफी मदद करती है। आप स्वभाव से सख्त, जिद्दी, घमंडी और शांत होते हैं। आप अपनी जिंदगी अपने अंदाज से जीना चाहते हैं और उससे कम पे आपको कुछ भी स्वीकार नहीं। आपकी दया आपको सबसे अच्छा और सबसे वफादार दोस्त बनती है, लेकिन यह गुण कभी कभी विश्वासघात का बड़ा कारण बन जाता है। आप जब पूरी ऊर्जा, आत्मविश्वास, चाहत और उदारता को एकसाथ ले कर कार्य करते हैं तो सभी जगह सफल होते हैं।

शारीरिक रूप-रंग वृश्चिक लग्न के लिए:

आपकी लग्न के लोग शरीर से काफी मजबूत और इनका कंधा काफी चौड़ा होता है और किसी भी हालात में आपकी शारीरिक बनावट काफी अच्छी होती है और चेहरा चौकोर आंखें लुभावनी और होठ सुंदर होते हैं। आपके बाल भूरे रंग के होते हैं। व आपकी शारीरिक बनावट से ताकत, गोपनीयता और गंभीरता साफ साफ दिखाई देती है।

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ नक्षत्र फल ॥

हिन्दू ज्योतिष में नक्षत्रों का विशेष महत्व है। आकाश को यदि 27 (कभी-कभी 28) बराबर भागों में विभाजित किया जाए, तो प्रत्येक भाग एक नक्षत्र कहलाता है। हर नक्षत्र को बराबर-बराबर चार पदों में भी विभाजित किया गया है। ज्योतिष की अवधारणा के अनुसार हर पद एक अक्षर को इंगित करता है। प्रायः किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा जिस पद में होता है, उससे जुड़े अक्षर से उस व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

आपका नक्षत्र रिपोर्ट : अश्विनी

आपका नक्षत्र चरण : 3

अश्विनी नक्षत्र फल : आप बहुत ऊर्जावान व सक्रिय हैं और आपमें उत्साह भी अधिक है। छोटे-मोटे काम से आप संतुष्ट नहीं रहेंगे। बड़े और महत्वपूर्ण काम करने में ही आपको ज्यादा आनंद आता है। हर काम को तेजी-से और कम-से-कम समय में करना आपकी आदत है। आपमें तेजी, फुर्ती और सक्रियता साफ दिखाई देती है। यदि आपके मन में कोई बात आती है तो आप शीघ्र ही उसे कार्यरूप में बदल डालते हैं। आप जिंदादिल, खुशमिजाज व समझदार हैं और किसी भी बात को जल्दी समझकर सही निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता भी आपमें है। आपका स्वभाव रहस्यमयी है इसलिए धर्म, मंत्र शास्त्र और योग में भी आपकी रुचि होगी। आप निडर और साहसी भी हैं परन्तु आपको क्रोध करने से हमेशा बचना चाहिए। अपने दुश्मनों को पराजित करना आपको अच्छी तरह आता है और आपको ताकत या दबाव से वश में नहीं किया जा सकता है सिर्फ प्यार और स्नेह से ही आपको अपना बनाया जा सकता है। सामने आप बेहद शांत और संयमी दिखाई देंगे तथा अपना निर्णय लेने में कभी भी जल्दबाजी नहीं करेंगे। हर पहलू पर विचार करने के बाद ही आप कोई निर्णय करते हैं और एक बार जो निर्णय कर लेते हैं फिर उससे पीछे नहीं हटते। अपने फैसलों में किसी की बातों से प्रभावित होकर परिवर्तन करना आपकी फितरत नहीं है। अपने हर काम को बखूबी अंजाम देना भी आप जानते हैं। आप यारों के यार यानी श्रेष्ठ मित्र साबित हो सकते हैं और जिन्हें चाहते हैं उनके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए भी तैयार रहते हैं। अगर आपको कोई पीड़ित दिखाई देता है तो उससे हमदर्दी जताने में भी आप पीछे नहीं रहते। घोर-से-घोर संकट में भी आप अपार धैर्य रखेंगे और ईश्वर पर भी आपका पूर्ण विश्वास है। परंपराप्रिय होते हुए भी आधुनिकता से आपका कोई बैर नहीं रहता है। साफ-सफाई का ध्यान रखना और अपने आसपास की हर वस्तु को तरीके से रखना आपको पसंद है।

शिक्षा और आय : आपको हरफनमौला कहा जा सकता है, यानी सभी बातों में आपकी कुछ-न-कुछ पैठ जरूर होगी। शिक्षा के क्षेत्र में आपको पर्याप्त सफलता मिल सकती है और चिकित्सा, सुरक्षा विभाग, पुलिस विभाग, सेना, गुप्तचर विभाग, इंजीनियरिंग, अध्यापन, प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों में भी आप हाथ आजमा सकते हैं। साहित्य और संगीत के प्रति भी आपका खासा लगाव होगा और आपकी आय के साधन भी एक से अधिक हो सकते हैं। तीस वर्ष की आयु तक आपको काफी उतार-चढ़ाव देखने पड़ सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : अपने परिवार से आप बेहद प्यार करते हैं लेकिन हो सकता है कि पिता की तरफ से आपका मन-मुटाव रहे, परन्तु मातृपक्ष के लोग आपकी मदद के लिए हमेशा तैयार रहेंगे और परिवार से बाहर के लोगों से भी आपको काफी मदद मिलेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखी दिखता है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक हो सकती है।

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

चरित्र:

आप एक ऊर्जावान व्यक्ति हैं और तब तक संतुष्ट नहीं होते जब तक क्रियाशील न हों। आप मानसिक एवं शारीरिक रूप से शक्तिशाली एवं काम के लिये उत्साह से भरपूर हैं। आपके अन्दर असीम साहस है एवं यह सभी गुण आपके जीवन को बहुआयामी बनाते हैं। आप एक जगह ही सिर्फ इसलिये ही नहीं रुक सकते क्योंकि आपने उस दिशा में कार्य प्रारम्भ किया था। अगर आपको सही लगता है तो आप अपना काम, मित्र, रुचियां या कुछ भी बदलने में नहीं हिचकिचाते। दुर्भाग्यवश आप परिवर्तन के सभी पहलुओं का अध्ययन नहीं कर पाते और यह जल्दबाजी आपको प्रायः मुसीबत में डालती है। फिर भी आपके अन्दर साहस है, आप जन्मजात रूप से मुसीबतों से लड़ने वाले हैं। यह सब मिलाकर आपको अन्त में सफलता दिलाते हैं। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि जीवन में आपको असीम धन की प्राप्ति होगी परन्तु धन केवल तभी उपयोगी होता है जब वह आपको सुख दिला सके और उस सुख से आप जीवन का सम्पूर्ण आनन्द ले सकें। यह मानने के अनेक कारण हैं कि आप जगह-जगह की सैर करेंगे और सम्भवतः अत्यधिक विश्व भ्रमण करेंगे। आपको देश के विभिन्न हिस्सों में पद प्राप्त होंगे। आपको अपने व्यवसाय के कारण भ्रमण अधिक करना पड़ेगा। हमारी सलाह है कि आपको अपने अन्दर धैर्य विकसित करने का प्रयास करना चाहिये और आपको किसी भी नये व्यवसाय को प्रारम्भ करने से पहले उस पर होने वाले खर्च का पूरा अध्ययन कर लेना चाहिये। यह कुछ छोटी बातें हैं परन्तु आपकी सफलता को खराब कर सकते हैं। साथ ही, परिवर्तन से बचें खासकर की 35 की उम्र के बाद।

सौभाग्य व संतुष्टि:

आपको ईश्वर ने अत्युत्तम व्यावहारिक ज्ञान और अपनी आवश्यकता के प्रति स्पष्ट नजरिया दिया है। आप तार्किक एवं व्यावहारिक हैं। आप वातावरण में खुशहाली खोजते हैं और अपने विचार-क्षितिज को व्यापक बनाने से डरते नहीं हैं। आप भय को पहचानकर उसे दूर करने के रास्ते खोज लेते हैं। कृपया ध्यान रखें कि यदि आप सिर्फ अपने बारे में सोचेंगे, तो आपकी सफलता की संभावना बहुत कम होगी।

जीवन शैली:

आपकी कठिन परिश्रम की प्रेरणा का मूल धन प्राप्ति की कामना है, क्योंकि आपको लगता है कि भौतिक ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण दूसरों से सम्मान पाने के लिये अनिवार्य है। परन्तु आपका ऐसा सोचना सही नहीं है, आप उस दिशा में तभी जाएं यदि आपको लगता है कि उस दिशा में सुख की प्राप्ति होगी।

क्या आपकी कुंडली में है **राजयोग?**
जानने के लिए

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रोजगार:

आप अपने व्यावसायिक जीवन में जिद्दी स्वभाव के एवं स्वयं निर्णय लेने वाले हैं। आप अनुकरण करने वाले की बजाय नेतृत्व करने वाले होंगे। आप समस्याओं को उद्देश्यपूर्ण तरीक से देखें और सिर्फ अपनी जिद के कारण ही निर्णय न लें, अन्यथा ये आपकी सफलता के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

व्यवसाय:

आप व्यापार के लिये उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं, क्योंकि इसके लिये एक विशेष प्रकार के स्वाभाव की आवश्यकता होती है जो आपके पास नहीं है। कई सारे कार्यक्षेत्र ऐसे हैं जहां पर रोज एक जैसे कार्य करने पड़ते हैं जोकि आपके कलात्मक स्वाभाव के विपरीत है। दूसरे शब्दों में, हालांकि आप इन दिशाओं में सफल नहीं होंगे, ऐसे कई कार्यक्षेत्र हैं जहां पर आप निश्चित रूप से बेहतर करेंगे। संगीत की कई ऐसी शाखाएं हैं जहां आप अपने आप को उपयुक्त पायेंगे। साहित्य और नाट्यकला आदि कुछ अन्य क्षेत्र हैं जहां के लिये आप उपयुक्त हैं। सामान्यतः आपके अन्दर कुछ श्रेष्ठ कार्यक्षेत्रों को अपनाने की क्षमता है। विधि एवं चिकित्सा क्षेत्र भी सम्भव है। परन्तु, चिकित्सा के बारे में एक बात विशेष ध्यान देने वाली है कि डॉक्टर होते हुए आपको कई ऐसे दुःखदायी दृश्यों को देखना पड़ेगा जो आपके संतुलित मिजाज को हिला देंगे।

स्वास्थ्य:

स्वास्थ्य के मामले में आप भाग्यवान हैं। आप बेहतरीन शारीरिक-संरचना के स्वामी हैं। स्वास्थ्य सदैव आपका साथ देगा। परंतु सर्दी जुकाम जैसी छोटी-छोटी परेशानियां कर सकती हैं। जैसे-जैसे आयु में वृद्धि होगी वैसे वैसे आप अपने को हिस्ट-पुष्ट व ताकतवर समझेंगे। तनाव से बचें। बिना डॉक्टरी परामर्श दवाओं का आपके ऊपर खासा खराब प्रभाव हो सकता है। आपको दीर्घायु व उपयोगी जीवन की प्राप्ति होगी।

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

फ्री कंसल्टेशन



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रुचि:

आपके कई शौक हैं और आप इन शौकों से ओत-प्रोत हैं। परन्तु अचानक ही आप धैर्य खो देते हैं व उन्हें एक तरफ कर देते हैं। फिर आप कोई नया शौक चुन लेते हैं और उसका भी यही हथ्र होता है। आप जीवन को इसी तरह से जीते जाते हैं। सारांशतः आपकी अभिरुचियां आपको पर्याप्त आनन्द देती हैं, साथ ही आपको बहुत कुछ सीखने का मौका भी देती हैं।

प्रेम आदि:

प्रेम आपके लिये भोजन की ही तरह आवश्यक है। आपके अन्दर गहरे लगाव का विशेष गुण है, जोकि आपको एक बेहतरीन जीवनसाथी बनाता है। आपको अपने से निम्नवर्ग के व्यक्ति से विवाह नहीं करना चाहिए, क्योंकि आपमें इस तरह के संयोग को सफल बनाने की सहनशीलता नहीं है। आप अत्यधिक सम्मोहक हैं और कलात्मक व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध तलाशते हैं।

वित्त:

वित्त संबन्धी मामलों में, आपको किसी बात की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। आपके मार्ग में कई सुअवसर आएंगे। आप शून्य से भी काफी कुछ बना सकते हैं, बड़ी एवं उतार-चढ़ाव वाली योजनायें, आपका एकमात्र जोखिम हैं। वित्त के सम्बन्ध में आप अपने मित्रों के लिये, यहाँ तक कि स्वयं के लिये एक पहली होंगे। आप अपने धन का असामान्य तरीकों में निवेश करेंगे। सामान्य तौर पर, आप पैसा बनाने में सफल रहेंगे मुख्यतः जमीन, घर, अचल सम्पत्ति से जुड़े हुए क्षेत्रों में।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

शिक्षा:

आप एक ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो सबसे अलग है। आप औरों लोगों से हटकर अपने जीवन को अलग तरीके से जीते हैं और जब बात आपकी शिक्षा की आती है तब भी आप ऐसा ही करते हैं। आप कई बार जल्दबाजी में भी बहुत चीजें सीखना चाहते हैं जो बाद में आपको परेशान करती हैं। हालांकि आपकी लेखन क्षमता बेहतर हो सकती है और आप लिखने में आनंद महसूस कर सकते हैं। आप अपनी गलतियों से सीखना पसंद करते हैं और सहजता से किसी भी कार्य में अपना सब कुछ लगा देते हैं। अपनी इसी विशेषता को आपको शिक्षा के क्षेत्र में भी लगाना चाहिए। कभी-कभी अपनी ही गलतियों के कारण आपको परेशानी उठानी पड़ सकती है और इसी वजह से आप की पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। आपको जीवन के अनुभवों से सीखने में आनंद आता है और यही बात आपको शिक्षा के क्षेत्र में छोटी-छोटी बातों से सीखने में सफलता देती है। आपके लिए आवश्यक है कि आप जो कुछ भी सीखते हैं उसे एक बार पुनः दोहराएँ ताकि वह आपकी स्मृतियों में अंकित हो जाए। शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ का सामना करने के बाद ही सफलता प्राप्त हो सकती है।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ मंगलदोष विवेचन ॥

सामान्यतः मंगल दोष जन्म-कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से एकादश भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से षष्ठ भाव में है।

अतः मंगल दोष न लग्न चार्ट में और न ही चंद्र चार्ट में उपस्थित है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खड़ी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

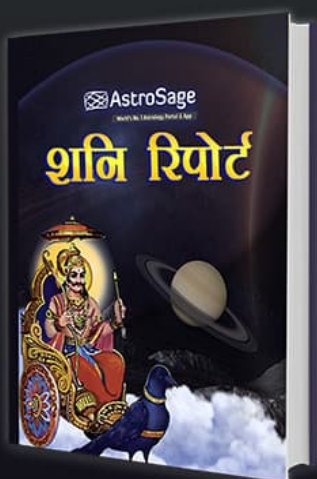
उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

- 1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
- 2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

- 1) चिड़ियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
- 2) घर पर हाथी-दांत रखें।
- 3) बरगद के पेड़ की पूजा मीठे दूध से करें

नोट: हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

नाम	Lovely
दिनांक	8/12/2000
समय	5:29:15
जन्म स्थान	Palwal
लिंग	Female
राशि	मेष
तिथि	द्वादशी
नक्षत्र	अश्विनी

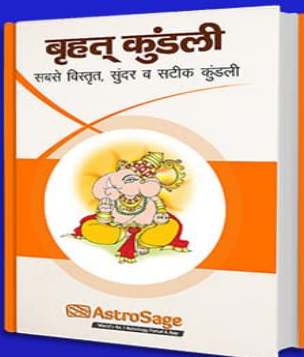
क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	साढे साती	वृशभ	जून 07, 2000	जुलाई 22, 2002	अस्त
2	साढे साती	वृशभ	जनवरी 09, 2003	अप्रैल 07, 2003	अस्त
3	छोटी पनौती	कर्क	सितम्बर 06, 2004	जनवरी 13, 2005	
4	छोटी पनौती	कर्क	मई 26, 2005	अक्टूबर 31, 2006	
5	छोटी पनौती	कर्क	जनवरी 11, 2007	जुलाई 15, 2007	
6	छोटी पनौती	वृश्चिक	नवम्बर 03, 2014	जनवरी 26, 2017	
7	छोटी पनौती	वृश्चिक	जून 21, 2017	अक्टूबर 26, 2017	
8	साढे साती	मीन	मार्च 30, 2025	जून 02, 2027	उदय
9	साढे साती	मेष	जून 03, 2027	अक्टूबर 19, 2027	शिखर
10	साढे साती	मीन	अक्टूबर 20, 2027	फरवरी 23, 2028	उदय
11	साढे साती	मेष	फरवरी 24, 2028	अगस्त 07, 2029	शिखर

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	साढे साती	वृशभ	अगस्त 08, 2029	अक्टूबर 05, 2029	अस्त
13	साढे साती	मेष	अक्टूबर 06, 2029	अप्रैल 16, 2030	शिखर
14	साढे साती	वृशभ	अप्रैल 17, 2030	मई 30, 2032	अस्त
15	छोटी पनौती	कर्क	जुलाई 13, 2034	अगस्त 27, 2036	
16	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 12, 2043	जून 22, 2044	
17	छोटी पनौती	वृश्चिक	अगस्त 30, 2044	दिसम्बर 07, 2046	
18	साढे साती	मीन	मई 15, 2054	सितम्बर 01, 2054	उदय
19	साढे साती	मीन	फरवरी 06, 2055	अप्रैल 06, 2057	उदय
20	साढे साती	मेष	अप्रैल 07, 2057	मई 27, 2059	शिखर
21	साढे साती	वृशभ	मई 28, 2059	जुलाई 10, 2061	अस्त
22	साढे साती	वृशभ	फरवरी 14, 2062	मार्च 06, 2062	अस्त
23	छोटी पनौती	कर्क	अगस्त 24, 2063	फरवरी 05, 2064	
24	छोटी पनौती	कर्क	मई 10, 2064	अक्टूबर 12, 2065	
25	छोटी पनौती	कर्क	फरवरी 04, 2066	जुलाई 02, 2066	
26	छोटी पनौती	वृश्चिक	फरवरी 06, 2073	मार्च 30, 2073	
27	छोटी पनौती	वृश्चिक	अक्टूबर 24, 2073	जनवरी 16, 2076	
28	छोटी पनौती	वृश्चिक	जुलाई 11, 2076	अक्टूबर 11, 2076	
29	साढे साती	मीन	मार्च 20, 2084	मई 21, 2086	उदय

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	साढे साती	मेष	मई 22, 2086	नवम्बर 09, 2086	शिखर
31	साढे साती	मीन	नवम्बर 10, 2086	फरवरी 07, 2087	उदय
32	साढे साती	मेष	फरवरी 08, 2087	जुलाई 17, 2088	शिखर
33	साढे साती	वृशभ	जुलाई 18, 2088	अक्टूबर 30, 2088	अस्त
34	साढे साती	मेष	अक्टूबर 31, 2088	अप्रैल 05, 2089	शिखर
35	साढे साती	वृशभ	अप्रैल 06, 2089	सितम्बर 18, 2090	अस्त
36	साढे साती	वृशभ	अक्टूबर 25, 2090	मई 20, 2091	अस्त
37	छोटी पनौती	कर्क	जुलाई 03, 2093	अगस्त 18, 2095	
38	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 03, 2102	नवम्बर 29, 2105	
39	साढे साती	मीन	मई 03, 2113	सितम्बर 21, 2113	उदय
40	साढे साती	मीन	जनवरी 26, 2114	मार्च 29, 2116	उदय
41	साढे साती	मेष	मार्च 30, 2116	मई 18, 2118	शिखर
42	साढे साती	वृशभ	मई 19, 2118	जुलाई 01, 2120	अस्त



सबसे डिटेल्ड कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

शनि साढ़े साती: उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बड़े आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कड़ी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढ़े साती: शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य-संबंधी समस्या, चरित्र-हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा-तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। संभव है कि इस काल-खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घड़ी से निकाल सकता है।

शनि साढ़े साती: अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई-लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे-धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल-खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली-भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोट: उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

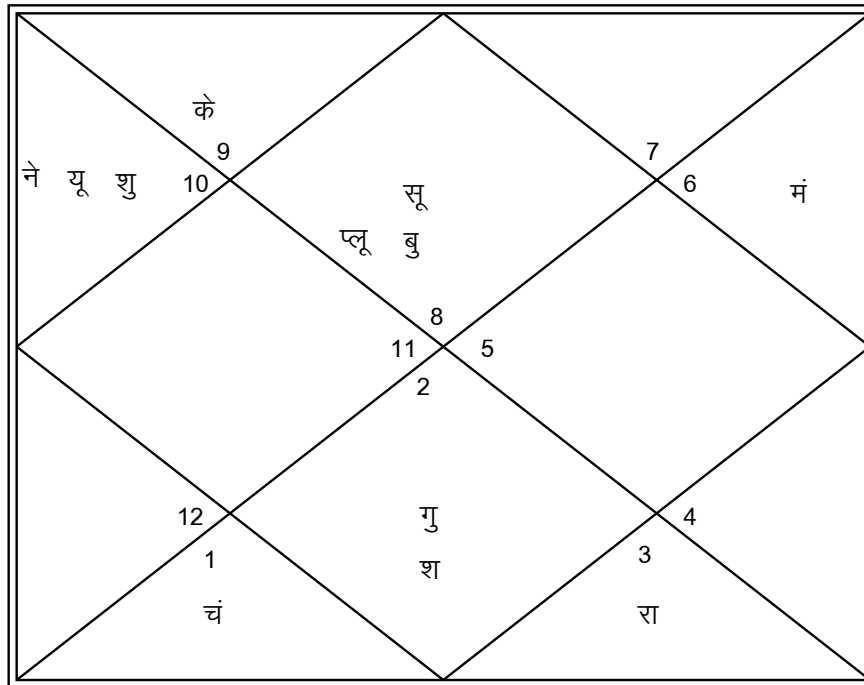
॥ कालसर्प दोष ॥

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थिति को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर है। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतः मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग-अलग जातकों पर अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पड़ता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन-किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषयोग का असर पड़ता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणाम: आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्र:



फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

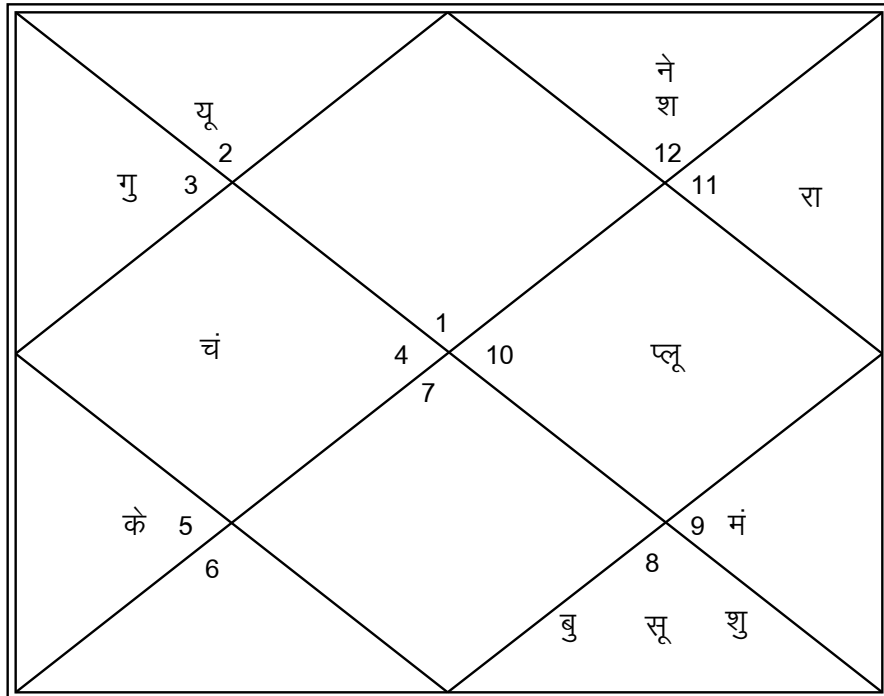
अभी चैट करें



॥ वर्षफल विवरण ॥

जन्म		वर्ष
Female	लिंग	Female
8 / 12 / 2000	जन्म दिनांक	8 / 12 / 2025
5:29:15	जन्म समय	15:18:25
गुरुवार	जन्म दिन	सोमवार
Palwal	जन्म स्थान	Palwal
28	अक्षांश	28
77	रेखांश	77
00 : 20 : 40	स्थानीय समय संशोधन	00 : 20 : 40
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
05 : 08 : 34	स्थानीय औसत समय	14 : 57 : 45
07 : 00 : 12	सूर्योदय	07 : 00 : 06
17 : 25 : 03	सूर्यास्त	17 : 25 : 00
वृश्चिक	लग्न	मेष
मंगल	लग्नस्वामी	मंगल
मेष	राशि	कर्क
मंगल	राशि स्वामी	चंद्र
अश्विनी	नक्षत्र	पुष्य
केतु	नक्षत्र स्वामी	शनि
वरीयान	योग	ब्रह्म
भाव	करण	बालव
धनु	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
023-52-10	अयनांश	024-13-07
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली



॥ वर्षफल विवरण ॥

मुन्था: 9 भाव

मुन्था की यह स्थिति आपको वर्ष भर उन्नति और सफलता प्रदान करेगी। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। घर में उत्सव सा माहौल रहेगा। जीवन साथी से, बच्चों से सुख मिलेगा और आपका नाम चारों दिशा में फैलेगा। विदेशी जमीन से भी आय संभव है।

दिसम्बर 8, 2025 – फरवरी 04, 2026 दशा शनि

शनि भाव संख्या 12

इस अवधि में जीवन शक्ति में कमी होने के कारण आप बेहद अशक्त महसूस करेंगे। फालतू के कामों में आप अपनी ऊर्जा बर्बाद करेंगे। धन हानि होगी। परिवारजनों की बीमारी आपकी मानसिक शांति भंग कर देगी। व्यय करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। अवांछित स्थान पर आपको निवास करना पड़ सकता है। लेकिन यह इद्रयातीत अनुभव प्राप्त करने के लिये बुरा समय नहीं है। धार्मिक क्रियाकलापों में कुछ समय बिताने की सलाह दी जाती है। सांसारिक मामलों के लिहाज से यह श्रेष्ठ समय नहीं है।

फरवरी 04, 2026 – मार्च 28, 2026 दशा बुध

बुध भाव संख्या 8

प्रयत्नों के बावजूद असफलता आपको निराश करेगी। आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि काम का बोझ बहुत रहेगा। छोटी छोटी बातों को लेकर विवाद बढ़ने की संभावना है। बेकार के व अमहत्वपूर्ण कामों में आप अपनी शक्ति और समय व्यय करेंगे। जल्दी धन कमाने की अपनी प्रवृत्ति पर अंकुश लगायें। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण कुछ काम आप नहीं कर पायेंगे। पारिवारिक जीवन में तनावग्रस्त रहेंगे। वैसे इस अवधि में गूढ़ एवं परामनोवैज्ञानिक अनुभव आपको प्राप्त होंगे। बेकार की यात्राओं से बचें।

मार्च 28, 2026 – अप्रैल 18, 2026 दशा केतु

केतु भाव संख्या 5

इस अवधि में आप बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करेंगे और ठीक से कुछ भी नहीं कर पायेंगे। जल्दबाजी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा। आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि इस अवधि में परिवार के किसी सदस्य की बीमार पड़ने की संभावना है। कुल मिलाकर पारिवारिक माहौल तनावग्रस्त ही रहेगा। जोखिम उठाने की प्रवृत्ति को लगाम दें। शत्रु आपकी साख बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। इस ओर पूरी तरह शक्तिरक्त रहें। जहां तक संभव हो। यात्रा से बचें। पेट के रोग से व्यथित रहेंगे।

अप्रैल 18, 2026 – जून 18, 2026 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 8

किसी बदनामी देने वाले काण्ड में फंसने के कारण आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आयेगी। स्वास्थ्य के लिहाज से भी यह कोई अच्छा समय नहीं है। अचानक धन प्राप्ति की संभावना है। लेकिन साथ ही साथ खर्च भी बढ़ेंगे। गुप्त और निगूढ़ सुखों को भोगने वाली प्रवृत्ति पर अंकुश लगाये नहीं तो बड़ी शर्मनाक स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। वैसे परिवारजनों का सहयोग पूरा रहेगा। यद्यपि कभी कभी मतभेद भी रह सकता है। जहां तक संभव हो यात्राएं न करें।

॥ वर्षफल विवरण ॥

जून 18, 2026 – जुलाई 06, 2026 दशा सूर्य सूर्य भाव संख्या 8

अचानक समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। संबंधियों से व्यवहार अच्छा रखें नहीं तो बेवजह झगड़े होंगे। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। लम्बी अवधि के लिये बीमार रहने की आशंका रहेगी। अनैतिक कार्यों में प्रवृत्ति न होईये तथा सन्देहास्पद सौदों से बचें। महत्वपूर्ण कागजों पर दस्तखत करने से पहले कागज अच्छी तरह पढ़ें।

जुलाई 06, 2026 – अगस्त 05, 2026 दशा चन्द्र चन्द्र भाव संख्या 4

यह बहुत अच्छा समय है। आप सुखी और विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। विलास सामग्री पर भी खर्च करेंगे। मां बाप से संबंध बहुत मधुर रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। शत्रुओं पर विजय पायेंगे। आमदनी में काफी इजाफा होगा।

अगस्त 05, 2026 – अगस्त 27, 2026 दशा मंगल मंगल भाव संख्या 9

बड़े बूढ़ों से सहयोग प्राप्त करेंगे। सुदूर स्थलों तक की गई लम्बी यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आमदनी बढ़ेगी और आय के नये स्रोत प्राप्त होंगे। यद्यपि खर्च भी बढ़ेंगे लेकिन आमदनी से अधिक नहीं होंगे। सट्टे के द्वारा आय होने की भी संभावना है। इस समय का पूरा सदुपयोग करें।

अगस्त 27, 2026 – अक्टूबर 21, 2026 दशा राहू राहू भाव संख्या 11

आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आमदनी में इजाफा स्पष्टरूप से प्रतिक्रित है। नये उद्यमों से सम्बद्ध रहेंगे। मित्र और सहयोगी पूरी मदद करेंगे। लम्बी यात्राओं से लाभ होगा। विदेशियों से अधिक सम्पर्क बनेंगे। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। प्रणय और प्रेम संबंधों के लिये यह काल वरदान सदृश है। आप संघर्ष में वीरोचित भावना से जूझते रहेंगे और शत्रुओं का पराभव कर देंगे। वैसे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सिर्फ कर्ण रोग से परेशान रह सकते हैं।

अक्टूबर 21, 2026 – दिसम्बर 08, 2026 दशा गुरु गुरु भाव संख्या 3

इस अवधि में आपके क्रियाकलाप प्रशंसा के हकदार होंगे और आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका आत्मविश्वास बढ़ा चढ़ा रहेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। छोटी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। पारिवारिक उत्थान के लिये आप कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहेंगे। अगर आप शादी शुदा हैं तो वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा। सहयोगियों और भागीदारों से खूब पटेगी। किसी बुजुर्ग से आप सहारा प्राप्त करेंगे। छोटे मोटे रोगों के उभरने की भी संभावना है।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

केतु महादशा फल (जन्म से दिसम्बर 19, 2003)

केतु धनु आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

गन्दी भाषा बोलने के कारण अपने लोगों से भी आपकी दुश्मनी होने की संभावना है। इसलिये आपको अपनी वाणी पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए। खास तौर पर उन लोगों के प्रति जिनसे आपकी घनिष्टता है। नहीं तो गलतफहमी हो जायेगी। पैसे रुपये की हानि होने की संभावना है। अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ आपके निर्वाह में मुश्किलें पेश आयेंगी। इस अवधि में कोई नये उधम न शुरू करें। इसी माह में आपके व्याधिग्रस्त होने की भी संभावना है। आत्मविश्वास की कमी आपमें स्पष्ट परिलक्षित होगी। यात्राओं का कोई व्यवहारिक अर्थ नहीं निकलेगा। साधारण तौर पर यह समय आपके लिये अच्छा नहीं है क्योंकि आत्मीय जन भी काफीदूर हो जायेंगे।

शुक्र महादशा फल (दिसम्बर 19, 2003 से दिसम्बर 19, 2023)

शुक्र मकर आपके तृतीय भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान आप अत्यधिक उत्साही और स्फूर्तिवान रहेंगे। छोटी यात्राएं सुखद एवम् सुफलदायक रहेंगी। पारिवारिक सुख कायम रहेगा और भाई बहन भी खुशहाल और सुखी रहेंगे। आप तुरंत निर्णय ले सकने की स्थिति में होंगे और वह निर्णय सही होंगे। इस दौरान आपके पास अपना वाहन होगा। लोगों से आपके सम्पर्क बढ़ेंगे। नौकरी के हालात में भी इजाफा होगा। सौभाग्यशाली समय होने के कारण मनचाहा काम होता रहेगा।

सूर्य महादशा फल (दिसम्बर 19, 2023 से दिसम्बर 19, 2029)

सूर्य वृश्चिक आपके प्रथम भाव में स्थित है:

इस अवधि में जीवन के प्रति आपका धनात्मक दृष्टिकोण रहेगा और आप में जरूरत से अधिक आत्मविश्वास रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार में आप कोई महत्वपूर्ण पद संभालेंगे या सत्ता प्राप्त करेंगे। छोटी अवधि की यात्राएं करेंगे जो आपकी कड़ी मेहनत के कारण सफलदायक होंगी। सामाजिक संस्थानों को आप खुलकर दान देंगे। स्वास्थ्य बुरा रह सकता है तथा परिवार में भी बीमारियां फैल सकती हैं।

चन्द्र महादशा फल (दिसम्बर 19, 2029 से दिसम्बर 19, 2039)

चन्द्र मेष आपके षष्ठ भाव में स्थित है:

इस अवधि में किये उद्यमों में सफलता नहीं मिलेगी। शत्रु आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। नौकरी के हालात भी बदतर होते जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी मानसिक शांति भंग करेगी। जल्दबाजी या हड़बड़ी से काम करने की प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखें। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी के कारण चिंतित रह सकते हैं।

मंगल महादशा फल (दिसम्बर 19, 2039 से दिसम्बर 19, 2046)

मंगल कन्या आपके एकादश भाव में स्थित है:

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढ़ोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

राहू महादशा फल (दिसम्बर 19, 2046 से दिसम्बर 19, 2064)

राहू मिथुन आपके अष्टम भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान दुर्घटनायें मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। प्रयासों में असफलता ही हाथ लगेगी। आपके भ्रम भयकारी मनोविकृति बन सकते हैं। आपकी साथी का बर्ताव आपको असहनीय मालूम पड़ेगा। धन्धे / व्यापार में भी काम अच्छा नहीं चलेगा। कुछ न कुछ परेशानियां आपको सदैव घेरे रहेंगी। स्वास्थ्य की समस्याओं के कारण आप सही प्रकार से अपने वचन नहीं निभा पायेंगे। गूढ़ विज्ञान की ओर आपकी रुचि जागृत होगी और कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं।

गुरु महादशा फल (दिसम्बर 19, 2064 से दिसम्बर 19, 2080)

गुरु वृषभ आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

शनि महादशा फल (दिसम्बर 19, 2080 से दिसम्बर 19, 2099)

शनि वृषभ आपके सप्तम भाव में स्थित है:

यह अच्छा समय नहीं है क्योंकि आपके भागीदार या सहयोगी आपको नीचा दिखाएंगें। औरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रहेंगे। रोजमर्रा के कामों में भी समस्याएं खड़ी हो सकती है। बेबुनियाद इल्जाम आपके सर मंडे जाएंगें। छोटे मोटे झंझट या विवादों से बचें। स्त्री वर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। जहां तक संभव हो फालतू की यात्रा कम करें। व्यापार के बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें।

बुध महादशा फल (दिसम्बर 19, 2099 से दिसम्बर 19, 2116)

बुध वृश्चिक आपके प्रथम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप अति सुखी रहेंगे। अपनी प्रतिभा योग्यता और निपुणता के बल पर अच्छे परिणाम प्राप्त करेंगे। महत्वपूर्ण विद्वानों के सम्पर्क में आयेंगे। आपका सम्मान होगा तथा ख्याति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा। अपनी महत्वाकांक्षाएं प्राप्त करने के लिये आप कड़ा प्रयत्न करेंगे। साधारण तौर पर आप सफल व्यक्ति समझे जायेंगे। यद्यपि काम का बोझ बहुत रहेगा और थकान होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

॥ योगिनी दशा ॥

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	11. 1.99
अंत	1. 9.02
भ्र	11. 1.99
भद्रि	31. 7.99
उल्	31. 3.00
सि	10. 1.01
सं	30.11.01
मं	9. 1.02
पिं	29. 3.02
ध	1. 9.02

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.02
अंत	1. 9.07
भद्रि	8. 4.03
उल्	8. 2.04
सि	28. 1.05
सं	10. 3.06
मं	30. 4.06
पिं	9. 8.06
ध	9. 1.07
भ्र	1. 9.07

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.07
अंत	1. 9.13
उल्	29. 7.08
सि	28. 9.09
सं	27. 1.11
मं	27. 3.11
पिं	27. 7.11
ध	27. 1.12
भ्र	27. 9.12
भद्रि	1. 9.13

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.13
अंत	1. 9.20
सि	7.12.14
सं	27. 6.16
मं	6. 9.16
पिं	26. 1.17
ध	26. 8.17
भ्र	5. 6.18
भद्रि	25. 5.19
उल्	1. 9.20

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.20
अंत	1. 9.28
सं	5. 5.22
मं	25. 7.22
पिं	4. 1.23
ध	4. 9.23
भ्र	24. 7.24
भद्रि	3. 9.25
उल्	2. 1.27
सि	1. 9.28

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.28
अंत	1. 9.29
मं	1. 8.28
पिं	21. 8.28
ध	21. 9.28
भ्र	31.10.28
भद्रि	20.12.28
उल्	20. 2.29
सि	30. 4.29
सं	1. 9.29

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.29
अंत	1. 9.31
पिं	30. 8.29
ध	30.10.29
भ्र	19. 1.30
भद्रि	29. 4.30
उल्	29. 8.30
सि	18. 1.31
सं	28. 6.31
मं	1. 9.31

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.31
अंत	1. 9.34
ध	18.10.31
भ्र	18. 2.32
भद्रि	18. 7.32
उल्	18. 1.33
सि	17. 8.33
सं	17. 4.34
मं	17. 5.34
पिं	1. 9.34

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.34
अंत	1. 9.38
भ्र	27.12.34
भद्रि	17. 7.35
उल्	17. 3.36
सि	27.12.36
सं	16.11.37
मं	26.12.37
पिं	18. 3.38
ध	1. 9.38

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.38
अंत	1. 9.43
भद्रि	28. 3.39
उल्	28. 1.40
सि	17. 1.41
सं	27. 2.42
मं	16. 4.42
पिं	26. 7.42
ध	26.12.42
भ्र	1. 9.43

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.43
अंत	1. 9.49
उल्	16. 7.44
सि	15. 9.45
सं	14. 1.47
मं	14. 3.47
पिं	14. 7.47
ध	14. 1.48
भ्र	14. 9.48
भद्रि	1. 9.49

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.49
अंत	1. 9.56
सि	24.11.50
सं	13. 6.52
मं	23. 8.52
पिं	12. 1.53
ध	12. 8.53
भ्र	22. 5.54
भद्रि	12. 5.55
उल्	1. 9.56

॥ योगिनी दशा ॥

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.56
अंत	1. 9.64
सं	22. 4.58
मं	12. 7.58
पिं	22.12.58
ध	22. 8.59
भ्र	12. 7.60
भद्रि	22. 8.61
उल्	22.12.62
सि	1. 9.64

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.64
अंत	1. 9.65
मं	22. 7.64
पिं	11. 8.64
ध	11. 9.64
भ्र	21.10.64
भद्रि	11.12.64
उल्	11. 2.65
सि	21. 4.65
सं	1. 9.65

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.65
अंत	1. 9.67
पिं	21. 8.65
ध	21.10.65
भ्र	10. 1.66
भद्रि	20. 4.66
उल्	20. 8.66
सि	9. 1.67
सं	19. 6.67
मं	1. 9.67

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.67
अंत	1. 9.70
ध	9.10.67
भ्र	9. 2.68
भद्रि	9. 7.68
उल्	9. 1.69
सि	8. 8.69
सं	8. 4.70
मं	8. 5.70
पिं	1. 9.70

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.70
अंत	1. 9.74
भ्र	18.12.70
भद्रि	8. 7.71
उल्	8. 3.72
सि	18.12.72
सं	7.11.73
मं	17.12.73
पिं	9. 3.74
ध	1. 9.74

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.74
अंत	1. 9.79
भद्रि	19. 3.75
उल्	19. 1.76
सि	8. 1.77
सं	18. 2.78
मं	7. 4.78
पिं	17. 7.78
ध	17.12.78
भ्र	1. 9.79

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.79
अंत	1. 9.85
उल्	7. 7.80
सि	6. 9.81
सं	5. 1.83
मं	5. 3.83
पिं	5. 7.83
ध	5. 1.84
भ्र	5. 9.84
भद्रि	1. 9.85

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.85
अंत	1. 9.92
सि	15.11.86
सं	4. 6.88
मं	14. 8.88
पिं	3. 1.89
ध	3. 8.89
भ्र	13. 5.90
भद्रि	3. 5.91
उल्	1. 9.92

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.92
अंत	1. 9.00
सं	13. 4.94
मं	3. 7.94
पिं	13.12.94
ध	13. 8.95
भ्र	3. 7.96
भद्रि	13. 8.97
उल्	13.12.98
सि	1. 9.00

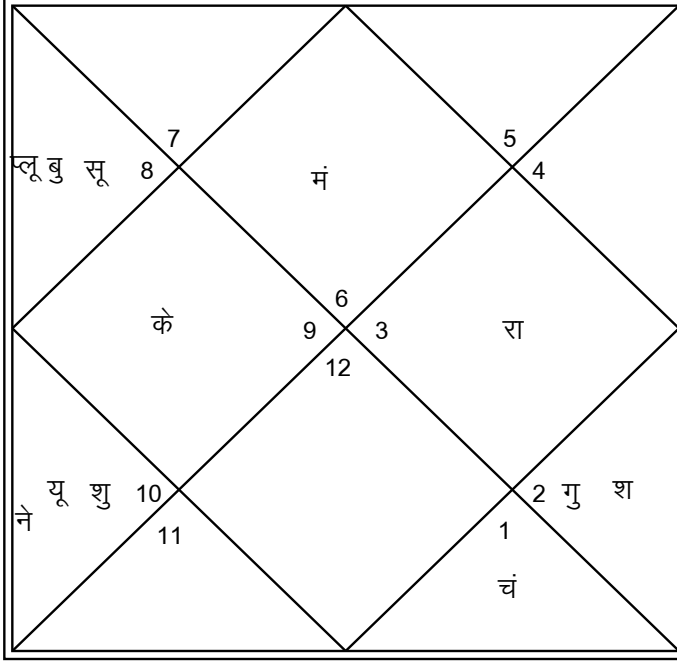
मं 1 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.00
अंत	1. 9.01
मं	13. 7.00
पिं	2. 8.00
ध	2. 9.00
भ्र	12.10.00
भद्रि	2.12.00
उल्	2. 2.01
सि	12. 4.01
सं	1. 9.01

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.01
अंत	1. 9.03
पिं	12. 8.01
ध	12.10.01
भ्र	1. 1.02
भद्रि	11. 4.02
उल्	11. 8.02
सि	31.12.02
सं	10. 6.03
मं	1. 9.03

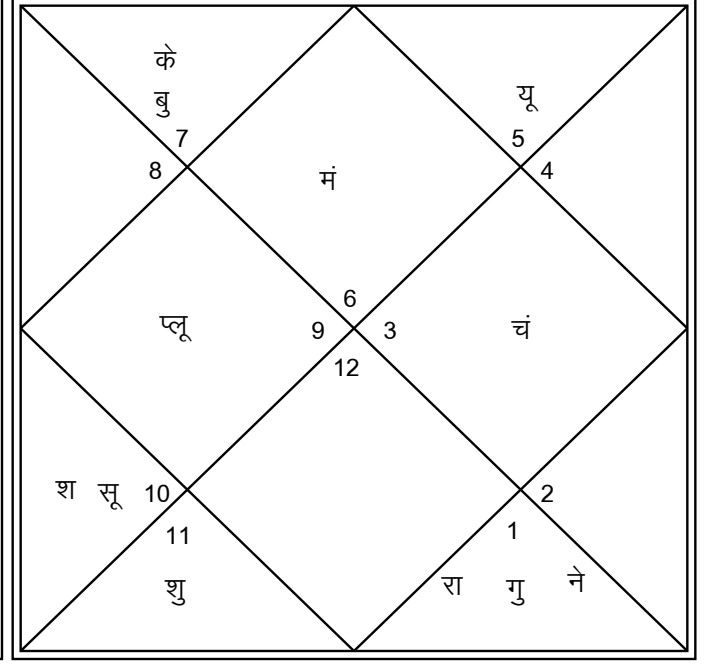
ध 3 वर्ष	
आरम्भ	1. 9.03
अंत	1. 9.06
ध	30. 9.03
भ्र	30. 1.04
भद्रि	30. 6.04
उल्	30.12.04
सि	30. 7.05
सं	30. 3.06
मं	30. 4.06
पिं	1. 9.06

॥ जैमिनी पद्धति – कारकांश एवं स्वांश ॥

कारकांश चक्र



स्वांश चक्र



कारक

कारक	स्थिर	चर
आत्म	सूर्य	मंगल
आमात्य	बुध	सूर्य
भ्रात	मंगल	बुध
मातृ	चंद्र	गुरु
पितृ	गुरु	चंद्र
ज्ञाति	शनि	शुक्र
दारा	शुक्र	शनि

अवस्था

ग्रह	जागृत	बलादि	दीप्तादि
सूर्य	जाग्रत	कुमार	दीप्त
चंद्र	जाग्रत	कुमार	मुदित
मंगल	जाग्रत	बाल	स्वत
बुध	स्वप्न	युवा	मुदित
गुरु	स्वप्न	वृद्ध	खल
शुक्र	सुसुप्त	मृत	स्वत
शनि	सुसुप्त	मृत	मुदित

॥ चरदशा ॥

चर महादशा

वृश्चिक 10 वर्ष	8.12.00	8.12.10
तुला 03 वर्ष	8.12.10	8.12.13
कन्या 10 वर्ष	8.12.13	8.12.23

सिंह 09 वर्ष	8.12.23	8.12.32
कर्क 03 वर्ष	8.12.32	8.12.35
मिथुन 05 वर्ष	8.12.35	8.12.40

वृष 08 वर्ष	8.12.40	8.12.48
मेष 05 वर्ष	8.12.48	8.12.53
मीन 10 वर्ष	8.12.53	8.12.63

कुंभ 09 वर्ष	8.12.63	8.12.72
मकर 08 वर्ष	8.12.72	8.12.80
धनु 05 वर्ष	8.12.80	8.12.85

चर अन्तरदशा

वृश्चिक 10 वर्ष		
तुला	8.12.00	8.10.01
कन्या	8.10.01	8. 8.02
सिंह	8.8.02	8. 6.03
कर्क	8.6.03	8. 4.04
मिथुन	8.4.04	8. 2.05
वृष	8.2.05	8.12.05
मेष	8.12.05	8.10.06
मीन	8.10.06	8. 8.07
कुंभ	8.8.07	8. 6.08
मकर	8.6.08	8. 4.09
धनु	8.4.09	8. 2.10
वृश्चिक	8.2.10	8.12.10

तुला 3 वर्ष		
वृश्चिक	8.12.10	8. 3.11
धनु	8.3.11	8. 6.11
मकर	8.6.11	8. 9.11
कुंभ	8.9.11	8.12.11
मीन	8.12.11	8. 3.12
मेष	8.3.12	8. 6.12
वृष	8.6.12	8. 9.12
मिथुन	8.9.12	8.12.12
कर्क	8.12.12	8. 3.13
सिंह	8.3.13	8. 6.13
कन्या	8.6.13	8. 9.13
तुला	8.9.13	8.12.13

कन्या 10 वर्ष		
तुला	8.12.13	8.10.14
वृश्चिक	8.10.14	8. 8.15
धनु	8.8.15	8. 6.16
मकर	8.6.16	8. 4.17
कुंभ	8.4.17	8. 2.18
मीन	8.2.18	8.12.18
मेष	8.12.18	8.10.19
वृष	8.10.19	8. 8.20
मिथुन	8.8.20	8. 6.21
कर्क	8.6.21	8. 4.22
सिंह	8.4.22	8. 2.23
कन्या	8.2.23	8.12.23

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ चरदशा ॥

सिंह 9 वर्ष		
कन्या	8.12.23	8. 9.24
तुला	8.9.24	8. 6.25
वृश्चिक	8.6.25	8. 3.26
धनु	8.3.26	8.12.26
मकर	8.12.26	8. 9.27
कुंभ	8.9.27	8. 6.28
मीन	8.6.28	8. 3.29
मेष	8.3.29	8.12.29
वृष	8.12.29	8. 9.30
मिथुन	8.9.30	8. 6.31
कर्क	8.6.31	8. 3.32
सिंह	8.3.32	8.12.32

कर्क 3 वर्ष		
मिथुन	8.12.32	8. 3.33
वृष	8.3.33	8. 6.33
मेष	8.6.33	8. 9.33
मीन	8.9.33	8.12.33
कुंभ	8.12.33	8. 3.34
मकर	8.3.34	8. 6.34
धनु	8.6.34	8. 9.34
वृश्चिक	8.9.34	8.12.34
तुला	8.12.34	8. 3.35
कन्या	8.3.35	8. 6.35
सिंह	8.6.35	8. 9.35
कर्क	8.9.35	8.12.35

मिथुन 5 वर्ष		
वृष	8.12.35	8. 5.36
मेष	8.5.36	8.10.36
मीन	8.10.36	8. 3.37
कुंभ	8.3.37	8. 8.37
मकर	8.8.37	8. 1.38
धनु	8.1.38	8. 6.38
वृश्चिक	8.6.38	8.11.38
तुला	8.11.38	8. 4.39
कन्या	8.4.39	8. 9.39
सिंह	8.9.39	8. 2.40
कर्क	8.2.40	8. 7.40
मिथुन	8.7.40	8.12.40

वृष 8 वर्ष		
मेष	8.12.40	8. 8.41
मीन	8.8.41	8. 4.42
कुंभ	8.4.42	8.12.42
मकर	8.12.42	8. 8.43
धनु	8.8.43	8. 4.44
वृश्चिक	8.4.44	8.12.44
तुला	8.12.44	8. 8.45
कन्या	8.8.45	8. 4.46
सिंह	8.4.46	8.12.46
कर्क	8.12.46	8. 8.47
मिथुन	8.8.47	8. 4.48
वृष	8.4.48	8.12.48

मेष 5 वर्ष		
वृष	8.12.48	8. 5.49
मिथुन	8.5.49	8.10.49
कर्क	8.10.49	8. 3.50
सिंह	8.3.50	8. 8.50
कन्या	8.8.50	8. 1.51
तुला	8.1.51	8. 6.51
वृश्चिक	8.6.51	8.11.51
धनु	8.11.51	8. 4.52
मकर	8.4.52	8. 9.52
कुंभ	8.9.52	8. 2.53
मीन	8.2.53	8. 7.53
मेष	8.7.53	8.12.53

मीन 10 वर्ष		
मेष	8.12.53	8.10.54
वृष	8.10.54	8. 8.55
मिथुन	8.8.55	8. 6.56
कर्क	8.6.56	8. 4.57
सिंह	8.4.57	8. 2.58
कन्या	8.2.58	8.12.58
तुला	8.12.58	8.10.59
वृश्चिक	8.10.59	8. 8.60
धनु	8.8.60	8. 6.61
मकर	8.6.61	8. 4.62
कुंभ	8.4.62	8. 2.63
मीन	8.2.63	8.12.63

कुंभ 9 वर्ष		
मीन	8.12.63	8. 9.64
मेष	8.9.64	8. 6.65
वृष	8.6.65	8. 3.66
मिथुन	8.3.66	8.12.66
कर्क	8.12.66	8. 9.67
सिंह	8.9.67	8. 6.68
कन्या	8.6.68	8. 3.69
तुला	8.3.69	8.12.69
वृश्चिक	8.12.69	8. 9.70
धनु	8.9.70	8. 6.71
मकर	8.6.71	8. 3.72
कुंभ	8.3.72	8.12.72

मकर 8 वर्ष		
धनु	8.12.72	8. 8.73
वृश्चिक	8.8.73	8. 4.74
तुला	8.4.74	8.12.74
कन्या	8.12.74	8. 8.75
सिंह	8.8.75	8. 4.76
कर्क	8.4.76	8.12.76
मिथुन	8.12.76	8. 8.77
वृष	8.8.77	8. 4.78
मेष	8.4.78	8.12.78
मीन	8.12.78	8. 8.79
कुंभ	8.8.79	8. 4.80
मकर	8.4.80	8.12.80

धनु 5 वर्ष		
वृश्चिक	8.12.80	8. 5.81
तुला	8.5.81	8.10.81
कन्या	8.10.81	8. 3.82
सिंह	8.3.82	8. 8.82
कर्क	8.8.82	8. 1.83
मिथुन	8.1.83	8. 6.83
वृष	8.6.83	8.11.83
मेष	8.11.83	8. 4.84
मीन	8.4.84	8. 9.84
कुंभ	8.9.84	8. 2.85
मकर	8.2.85	8. 7.85
धनु	8.7.85	8.12.85

॥ गोचर फल (30-1-2025) ॥

सूर्य मकरराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

घरेलु जीवन में आप सुखी रहेंगे और बहु प्रतीक्षित इच्छाओं की संपूर्ति होगी। इस अवधि में आप बहुत भ्रमण करेंगे। छोटी यात्राएं भाग्यशाली सिद्ध होंगी और सुखद रहेंगी। धन लाभ के समाचार प्राप्त करेंगे। पारिवारिक मित्रों और रिश्तेदारों से सामाजिक संबंध और अच्छे होंगे। इस काल में स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

चन्द्र मकरराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपका आत्म विश्वास बढ़ा चढ़ा रहेगा। भाई बहिन भी खुशहाल रहेंगे। मां बाप से संबंध बहुत अच्छे रहेंगे। अगर नौकरी करते हैं तो पदोन्नति की संभावना है। स्थान परिवर्तन या व्यवसाय में बदलाव की भी संभावना है।

मंगल मिथुनराशि में आपके आठवें भाव में स्थित है:

यह बिल्कुल भी अच्छा समय नहीं है। ध्यान रखें। आर्थिक हानि की पूरी संभावना है। इस अवधि में कोई जोखिम न उठाएँ और सट्टेबाजी से बचें। स्वास्थ्य के कारण परेशानियां शुरू हो जायेंगी। अपने परिवार के सदस्यों से संबंधों में बिगाड़ होने की संभावना है। किसी परिचित की मृत्यु की खबर भी मिल सकती है।

क्या आपकी कुंडली में है **राजयोग?**
जानने के लिए

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ गोचर फल (30-1-2025) ॥

बुध मकरराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

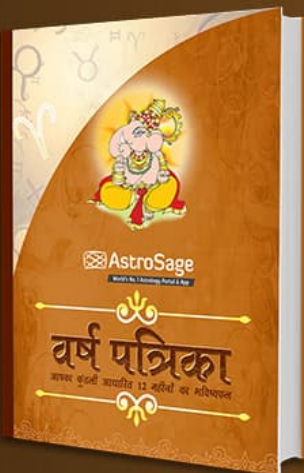
आपकी मेहनत रंग लायेगी। छोटी यात्राएं अच्छा फल प्रदान करेंगी। विदेश स्थलों से अच्छी खबर मिलेगी। भाई बहिनों से सहायता मिलेगी। नये लोगों से सम्पर्क आपके सौभाग्य के कारण बढ़ेंगे और अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। पुराने दोस्तों से मुलाकात होगी। अगर आप प्रकाशन या एजेन्सी के काम से सम्बंधित हैं तो शुभ परिणाम सामने आयेंगे। आपमें कलात्मक अभिव्यक्ति प्रकट करने की क्षमता होगी तथा भावनात्मक अभिनय की सहज प्रतिभा रहेगी।

गुरु वृशभराशि में आपके सातवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

शुक्र मीनराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान आप स्त्रीवर्ग की ओर आकर्षित रहेंगे। इस अवधि में अचानक ऐसी घटनाएं घटेंगी जो आपके लिये हितकर हो। इसके अलावा इस दौरान आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और खुशहाली भी बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं की सम्पूर्ति होगी। यदि आप में सृजनात्मक क्षमता है तो इस अवधि के दौरान आपकी कला संगीत इत्यादि में सफलदायक गति रहेगी। सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा और पुराने मित्रों सहयोगियों से मुलाकात होगी। संचार के माध्यम से आपको कोई बहुत अच्छी खबर भी मिल सकती है।



आपके अगले 12
महीने की पूरी भविष्यवाणी
सिर्फ एक क्लिक दूर

अभी ऑर्डर करें

॥ गोचर फल (30-1-2025) ॥

शनि कुंभराशि में आपके चौथे भाव में स्थित है:

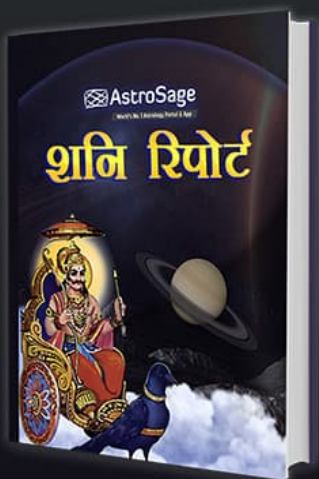
आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

राहु मीनराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

सही निर्णय लेने की आपकी क्षमता और योग्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपने आस पास भ्रम का विश्व बना लेना चाहेंगे। झूठी आशाएं आपके लक्ष्य को भ्रमित कर देंगी। सट्टेबाजी की प्रवृत्ति पर पूरा अंकुश लगाये। मित्रों से संबंध मधुर नहीं रहेंगे। किसी मुकदमेबाजी के चक्कर में अपने आपको न फंसायें। किसी के जमानती बनने की चेष्टा न करें। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। फूड पाइजनिंग के कारण पेट के रोग उभर सकते हैं।

केतु कन्याराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

अचानक परिस्थितियां आपके काफी अनुकूल होती जायेंगी। कुछ व्यापारिक सौदे आपको काफी लाभावत कर देंगे। मित्र और हितैषियों का पूरा सहयोग रहेगा। उच्च कोटि के शारीरिक या मांसल सुख आपको प्राप्त होंगे। अगर नौकरीपेशा हैं तो पदोन्नति प्राप्त करेंगे। इस अवधि में लम्बी यात्रा की भी प्रबल संभावना है। पारिवारिक जीवन संतोष प्रदान करेगा। सामाजिक क्षेत्र में आप प्रचुर प्रतिष्ठा और सम्मान के भागी होंगे।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

सूर्य आपके पहले भाव में स्थित है:

यदि सूर्य शुभ है तो जातक धार्मिक इमारतों या भवनों का निर्माण और सार्वजनिक उपयोग के लिए कुओं की खुदाई करवाता है। उसकी आजीविका का स्थाई स्रोत अधिकांशतः सरकारी होगा। इमानदारी से कमाए गए धन में वृद्धि होगी। जातक अपनी आंखों देखी बातों पर ही विश्वास करेगा, कान से सुनी गई बातों पर नहीं। यदि सूर्य अशुभ है तो जातक के पिता की मृत्यु जातक के बचपन में ही हो जाती है। यदि शुक्र सातवें भाव में हो तो दिन के समय बनाया गया शारीरिक संबंध पत्नी को लगातार बीमारी देता है और तपेदिक के संक्रमण का भय पैदा करता है। पहले भाव का अशुभ सूर्य और पांचवें भाव का मंगल एकएक कर संतान की मृत्यु का कारण होगा। इसी प्रकार पहले भाव का अशुभ सूर्य और आठवें भाव का शनि एकएक करके संतान की मृत्यु का कारण बनता है। यदि सातवें भाव में कोई ग्रह न हो तो 24 से पहले विवाह कर लेना जातक के लिए भाग्यशाली रहता है अन्यथा जातक के चौबीसवां साल विनाशकारी साबित होगा।

उपाय

- 1) 24 वर्ष से पहले ही शादी कर लें।
- 2) दिन के समय यौन संबंध न बनाएं।
- 3) अपने पैतृक घर में पानी के लिए एक हैंडपंप लगवाएं।
- 4) अपने घर के अंत में बाईं ओर एक छोटे और अंधेरे कमरे का निर्माण कराएं।
- 5) पति या पत्नी दोनों में से किसी एक को गुड़ खाना बंद कर देना चाहिए।



एस्ट्रोसेज शॉप

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी



परामर्श



॥ लालकिताब फलकथन ॥

चन्द्र आपके छठे भाव में स्थित है:

यह भाव बुध और केतु से प्रभावित होता है। इस घर में स्थित चंद्रमा दूसरे, आठवें, बारहवें और चौथे घरों में बैठे ग्रहों से प्रभावित होता है। ऐसा जातक बाधाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करता है और अपनी शैक्षिक उपलब्धियों का लाभ उठाने के लिए उसे बहुत संघर्ष करना पड़ता है। यदि चंद्रमा छठवें, दूसरे, चौथे, आठवें और बारहवें घर में होता है तो यह शुभ भी होता है ऐसा जातक किसी मरते हुए के मुंह में पानी की कुछ बूंदें डालकर उसे जीवित करने का काम करता है। यदि छठवें भाव में स्थित चंद्रमा अशुभ है और बुध दूसरे या बारहवें भाव में स्थित है तो जातक में आत्महत्या करने की प्रवृत्ति पाई जाएगी। ठीक इसी तरह यदि चन्द्रमा अशुभ है और सूर्य बारहवें घर में है तो जातक या उसकी पत्नी या दोनो ही आंख के रोग या परेशानियों से ग्रस्त होंगे।

उपाय

- 1) अपने पिता को अपने हाथों से दूध परोसें।
- 2) रात के समय दूध कभी भी न पिएं। लेकिन दिन के समय दूध उपयोग किया जा सकता है। रात के समय दही और पनीर का सेवन किया जा सकता है।
- 3) दूध का दान न करें। केवल पूजा के धार्मिक स्थानों पर दूध दिया जा सकता है।
- 4) जातक अस्पताल या श्मशान भूमि में कुआं खुदवाएं।

मंगल आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

क्योंकि यह घर बृहस्पति और शनि ग्रह से प्रभावी होता है इसलिए इस घर में मंगल अच्छे परिणाम देता है। यदि बृहस्पति उच्च का हो तो मंगल बहुत अच्छे परिणाम देता है। जातक साहसी और आम तौर पर व्यापारी होता है।

उपाय

- 1) पैतृक संपत्ति कभी भी न बेचें।
- 2) किसी मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर रखना अच्छे परिणाम देगा।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

बुध आपके पहले भाव में स्थित है:

पहले घर में स्थित बुध जातक को दयालु, विनोदी और प्रशासनिक कौशल के साथ राजनयिक बनाता है। आमतौर पर ऐसा लम्बे समय तक जीता है, स्वार्थी हो जाता है तथा स्वभाव से नटखट होकर, मांशाहार और मदिरा पान की ओर आकृष्ट हो जाता है। जातक को सरकार से मदद मिलती है और उसकी बेटियां राजसी जीवन जीती हैं। जिस भाव में सूर्य बैठा है उस भाव से संबंधित रिश्तेदार बहुत कम समय में खूब पैसा कमा कर धनवान बन जाते हैं। स्वयं जातक के पास भी आमदनी के कई स्रोत होते हैं। यदि सूर्य बुध के साथ पहले भाव में हो अथवा बुध सूर्य के द्वारा देखा जाता हो तो जातक की पत्नी किसी अमीर और कुलीन परिवार से आएगी और अच्छे स्वभाव वाली होगी। ऐसा जातक मंगल से दुष्प्रभावी हो सकता है लेकिन इसे सूर्य से बुरे परिणाम नहीं मिलेंगे। राहु और केतु बुरे प्रभावी होंगे जो जातक के वंशजों और ससुराल वालों के लिए हानिकारक होंगे। पहले घर में स्थित बुध के कारण जातक दूसरों को प्रभावित करने की कला में माहिर होगा और वह किसी राजा की तरह जिएगा। पहले घर में बुध नीच का हो और चंद्रमा सातवें घर में हो तो जातक नशे के कारण अपना विनाश कर लेता है।

उपाय

- 1) हरे रंग और शालियों से यथासंभव दूर रहें।
- 2) अंडा, मांस और मदिरा का सेवन न करें।
- 3) घूम फिर कर करने वाले व्यापार से एक ही स्थान पर बैठ कर करने वाला व्यापार अच्छा और फायदेमंद रहेगा।

गुरु आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवां घर शुक्र का होता है, अतः यह मिश्रित परिणाम देगा। जातक का भाग्योदय शादी के बाद होगा और जातक धार्मिक कार्यों में शामिल होगा। घर के मामले में मिलने वाला अच्छा परिणाम चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा। जातक देनदार नहीं हो सकता है लेकिन उसके अच्छे बच्चे होंगे। यदि सूर्य पहले भाव में हो तो जातक एक अच्छा ज्योतिषी और आराम पसंद होगा। लेकिन यदि बृहस्पति सातवें भाव में नीच का हो और शनि नौवें भाव में हो तो जातक चोर हो सकता है। यदि बुध नौवें भाव में हो तो जातक के वैवाहिक जीवन परेशानियों से भरा होगा। यदि बृहस्पति नीच का हो तो जातक को भाइयों से सहयोग नहीं मिलेगा साथ ही वह सरकार के समर्थन से भी वंचित रह जाएगा। सातवें घर में बृहस्पति पिता के साथ मतभेद का कारण बनता है। ऐसे में जातक को चाहिए कि वह कभी भी किसी को कपड़े दान न करे, अन्यथा वह बड़ी गरीबी की चपेट में आ जाएगा।

उपाय

- 1) भगवान शिव की पूजा करें।
- 2) घर में किसी भी देवता की मूर्ति न रखें।
- 3) हमेशा अपने साथ किसी पीले कपड़े में बांध कर सोना रखें।
- 4) पीले कपड़े पहने हुए साधु और घ्कीरों से दूर रहें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

शुक्र आपके तीसरे भाव में स्थित है:

यहाँ स्थित शुक्र जातक को एक आकर्षक व्यक्तित्व देता है जिससे हर स्त्री उसकी ओर आकर्षित होती है। आम तौर पर सभी उसे प्यार करते हैं। यदि जातक किसी और स्त्री से संबंध रखता है तो जातक को अपनी पत्नी की चापलूसी करनी पड़ती है। अन्यथा वह हमेशा अपनी पत्नी पर हावी रहता है। हालांकि जातक की पत्नी सब पर हावी रहेगी लेकिन यदि जातक पराई स्त्री से संबंध नहीं रखता हो वह उस पर हावी रहेगा। जातक की पत्नी साहसी, समर्थक और बैलगाड़ी के दूसरे बैल की तरह जातक के लिए सहयोगी होगी। वह जातक को छल, चोरी और नुकसान से बचाने वाली होगी। अन्य महिलाओं के साथ संपर्क जातक के लिए हानिकारक साबित होगा और दीर्घायु पर प्रतिकूल असर डालने वाला होगा। यदि नवम और एकादश भाव में शुक्र के शत्रु ग्रह स्थित हों तो प्रतिकूल परिणामों की प्राप्ति होगी। जातक के कई बेटियां होंगी।

उपाय

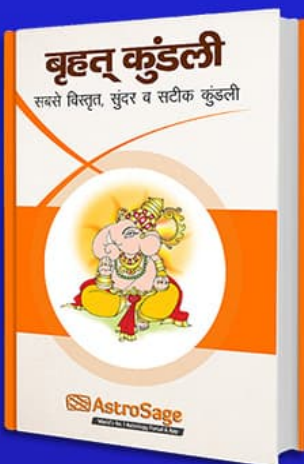
- 1) अपनी पत्नी का सम्मान करें और अतिरिक्त वैवाहिक मामलों से बचें।
- 2) पराई औरतों के साथ छेड़खानी फलर्ट) करने से बचें।

शनि आपके सातवें भाव में स्थित है:

यह घर बुध और शुक्र से प्रभावित होता है, दोनों ही शनि के मित्र ग्रह हैं। इसलिए शनि इस घर में बहुत अच्छा परिणाम देता है। शनि से जुड़े व्यवसाय जैसे मशीनरी और लोहे का काम बहुत लाभदायक होगा। यदि जातक अपनी पत्नी से अच्छे संबंध रखता है तो वह अमीर और समृद्ध होगा और लंबी आयु के साथ अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेगा। यदि बृहस्पति पहले घर में हो तो सरकार से लाभ होगा। यदि जातक व्यभिचारी हो जाता है या शराब पीने लगता है तो शनि नीच और हानिकर हो जाता है। यदि जातक 22 साल के बाद शादी करता है तो उसकी दृष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

उपाय

- 1) किसी बांसुरी में चीनी भरें और किसी सुनसान जगह जैसे कि जंगल आदि में दफना दें।
- 2) काली गाय की सेवा करें।



सबसे डिटेल कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

राहू आपके आठवें भाव में स्थित है:

आठवें घर का संबंध शनि और मंगल ग्रह से होता है। इसलिए इस भाव का राहू अशुभ फल देता है। जातक अदालती मामलों में बेकार में पैसे खर्च करता है। परिवारिक जीवन भी प्रतिकूलता से प्रभावित होता है। यदि मंगल ग्रह शुभ हो तथा पहले या आठवें घर में हो अथवा शुभ शनि आठवें घर में हो तो जातक बहुत अमीर होगा।

उपाय

- 1) चांदी का एक चौकोर टुकड़ा पास रखें।
- 2) सोते समय तकिये के नीचे सौंफ रखें।
- 3) बिजली का काम या बिजली विभाग में काम न करें।

केतु आपके दूसरे भाव में स्थित है:

दूसरा घर चंद्रमा से प्रभावित होता है, जो केतु का शत्रु ग्रह है। यदि दूसरे भाव में स्थित केतु शुभ है तो जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलती है। जातक खूब यात्राएं करेगा और यात्राओं से लाभ मिलेगा। ऐसी स्थिति में शुक्र अपनी स्थिति के अनुसार अच्छे परिणाम देता है। चंद्रमा बुरे परिणाम देता है। यदि सूर्य 12 वें घर में हो जातक अपनी उम्र के चौबीस साल के बाद से अपनी आजीविका कमाना शुरू कर देता है। यदि केतु के साथ उच्च का बृहस्पति हो तो लाखों की आमदनी होगी। यदि दूसरे भाव में स्थित केतु अशुभ है तो जातक सूखे इलाकों की यात्राएं करेगा। जातक एक जगह पर आराम नहीं कर सकेगा और वह जगहजगह भटकता रहेगा। आमदनी अच्छी होगी लेकिन, खर्च भी उतना ही हो जाएगा। इसप्रकार वास्तविक लाभ नगण्य हो जाएगा। यदि चंद्रमा या मंगल आठवें घर में हों तो जातक अल्पायु होगा और उसे सोलह या बीस साल की उम्र में गंभीर समस्या होगी। यदि आठवां घर खाली हो तो भी केतु बुरे परिणाम देगा।

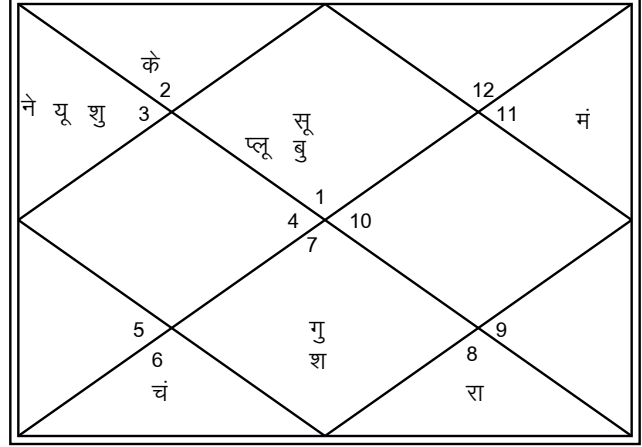
उपाय

- 1) माथे पर केसर या हल्दी का तिलक लगाएं।
- 2) चरित्र का ढीला नहीं होना चाहिए।
- 3) यदि मंदिरों की धार्मिक यात्रा करें और मंदिरों में सिर झुकाएं तो दूसरे भाव का केतु अच्छे परिणाम देगा।

॥ लाल किताब गणना ॥

नाम	Lovely	सूर्योदय	07. 00. 12	दशा भोग्य	KET 3 Y 0 M 11 D
लिंग	Female	रेखांश	77.20.E	तिथि	द्वादशी
दिनांक	8.12.2000	अक्षांश	28.9.N	योग	वरीयान
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Palwal	लग्न	वृश्चिक
समय	5.29.15	अयनांश	023-52-10	राशि	मेष
साम्पातिक काल	10.16.47	अयनांश नाम	लाहिरी	नक्षत्र	अश्विनी-3
				दशार्थ	सूर्यास्त
				करण	भाव
				लग्न स्वामी	मंगल
				राशि स्वामी	मंगल
				नक्षत्र स्वामी	केतु

लग्न चक्र



ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	मेष	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
चंद्र	कन्या	-----	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
मंगल	कुंभ	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
बुध	मेष	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
गुरु	तुला	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
शुक्र	मिथुन	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
शनि	तुला	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
राहु	वृश्चिक	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
केतु	वृषभ	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष	गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
आरम्भ 08/12/2000	आरम्भ 08/12/2006	आरम्भ 08/12/2012	आरम्भ 08/12/2015	आरम्भ 08/12/2021	आरम्भ 08/12/2023
अंत 08/12/2006	अंत 08/12/2012	अंत 08/12/2015	अंत 08/12/2021	अंत 08/12/2023	अंत 08/12/2024
राहु 08/12/2002	मंगल 08/12/2008	शनि 08/12/2013	केतु 08/12/2017	सूर्य 08/08/2022	गुरु 08/04/2024
बुध 08/12/2004	केतु 08/12/2010	राहु 08/12/2014	गुरु 08/12/2019	चन्द्र 08/04/2023	सूर्य 08/08/2024
शनि 08/12/2006	राहु 08/12/2012	केतु 08/12/2015	सूर्य 08/12/2021	मंगल 08/12/2023	चन्द्र 08/12/2024
शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष	शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष
आरम्भ 08/12/2024	आरम्भ 08/12/2027	आरम्भ 08/12/2033	आरम्भ 08/12/2035	आरम्भ 08/12/2041	आरम्भ 08/12/2047
अंत 08/12/2027	अंत 08/12/2033	अंत 08/12/2035	अंत 08/12/2041	अंत 08/12/2047	अंत 08/12/2050
मंगल 08/12/2025	मंगल 08/12/2029	चन्द्र 08/08/2034	राहु 08/12/2037	मंगल 08/12/2043	शनि 08/12/2048
सूर्य 08/12/2026	शनि 08/12/2031	मंगल 08/04/2035	बुध 08/12/2039	केतु 08/12/2045	राहु 08/12/2049
चन्द्र 08/12/2027	शुक्र 08/12/2033	गुरु 08/12/2035	शनि 08/12/2041	राहु 08/12/2047	केतु 08/12/2050
गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष	शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष
आरम्भ 08/12/2050	आरम्भ 08/12/2056	आरम्भ 08/12/2058	आरम्भ 08/12/2059	आरम्भ 08/12/2062	आरम्भ 08/12/2068
अंत 08/12/2056	अंत 08/12/2058	अंत 08/12/2059	अंत 08/12/2062	अंत 08/12/2068	अंत 08/12/2070
केतु 08/12/2052	सूर्य 08/08/2057	गुरु 08/04/2059	मंगल 08/12/2060	मंगल 08/12/2064	चन्द्र 08/08/2069
गुरु 08/12/2054	चन्द्र 08/04/2058	सूर्य 08/08/2059	सूर्य 08/12/2061	शनि 08/12/2066	मंगल 08/04/2070
सूर्य 08/12/2056	मंगल 08/12/2058	चन्द्र 08/12/2059	चन्द्र 08/12/2062	शुक्र 08/12/2068	गुरु 08/12/2070
शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष	गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
आरम्भ 08/12/2070	आरम्भ 08/12/2076	आरम्भ 08/12/2082	आरम्भ 08/12/2085	आरम्भ 08/12/2091	आरम्भ 08/12/2093
अंत 08/12/2076	अंत 08/12/2082	अंत 08/12/2085	अंत 08/12/2091	अंत 08/12/2093	अंत 08/12/2094
राहु 08/12/2072	मंगल 08/12/2078	शनि 08/12/2083	केतु 08/12/2087	सूर्य 08/08/2092	गुरु 08/04/2094
बुध 08/12/2074	केतु 08/12/2080	राहु 08/12/2084	गुरु 08/12/2089	चन्द्र 08/04/2093	सूर्य 08/08/2094
शनि 08/12/2076	राहु 08/12/2082	केतु 08/12/2085	सूर्य 08/12/2091	मंगल 08/12/2093	चन्द्र 08/12/2094
शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष			
आरम्भ 08/12/2094	आरम्भ 08/12/2097	आरम्भ 08/12/2103			
अंत 08/12/2097	अंत 08/12/2103	अंत 08/12/2105			
मंगल 08/12/2095	मंगल 08/12/2099	चन्द्र 08/08/2104			
सूर्य 08/12/2096	शनि 08/12/2101	मंगल 08/04/2105			
चन्द्र 08/12/2097	शुक्र 08/12/2103	गुरु 08/12/2105			

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य वृश्चिक राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की मित्र राशि है। सूर्य दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। सूर्यदृष्टि सातवें घरावर आहे गुरु,शनि की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित सूर्य इस बात का संकेत कर रहा है कि आपका स्वभाव स्पष्ट और उदार होगा। आपके छोटे भाई और बहन भाग्यशाली होंगे वो अच्छे मित्रों वाले और पद प्रतिष्ठा वाले होंगे। आपकी मां धार्मिक विचारों वाली और तीर्थयात्रा करने वाली होंगी। आपके बच्चों की शिक्षा का स्तर अच्छा होगा। वे दूर देश में शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सरकार से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। सत्ता से से जुड़े और शक्तिशाली लोगों से आपके अच्छे रिश्ते रहेंगे। आप अपने पिता का आदर करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं। आपका जीवन साथी अच्छे खानदान से होगा। आप स्वभाव से ईमानदार और धार्मिक होंगे अथवा नैतिकता के दृष्टिकोण से आपका बर्ताव उचित रहेगा। लेकिन यहां स्थित सूर्य आपके स्वभाव में आक्रामकता, कभीकभी विवेक हीनता, अलस्य, क्षमाहीनता, घमंड, धर्यहीनता देता है। हालांकि यह आपमें महत्वाकांक्षा और प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराने के गुण भी देता है।

यहां स्थित सूर्य आपको तेजस्वी और लम्बा तो बनाता है लेकिन साथ ही गंजापन और दुर्बलता भी दे सकता है, और आप सिर या आंखों की समस्या से पीड़ित हो सकते हैं लेकिन आपका बाकी स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हो सकता है कि बाल्यावस्था में स्वास्थ्य कुछ हद तक उदासीन रहे। आपकी कुछ कमाई पशुओं के माध्यम से भी हो सकती है, और बच्चों की संख्या कम रह सकती है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र मेष राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की मित्र राशि है। चन्द्र नौवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है। चन्द्रदृष्टि बारहवें घरावर आहे मंगल,केतु की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

यहां स्थित चंद्रमा अधिकांशतः आप को अच्छे फल देने में असमर्थ रहेगा। चंद्रमा की तह स्थिति आपको नौकरी में कई बार बदलाव के लिए बाध्य कर सकती है। आपको अपनी माता के साथसाथ अपने मताहतों के साथ अपने संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ेगा। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां रह सकती हैं। आपका बचपना किसी असंतोष से घिरा रह सकता है।

हालांकि कुछ मामलों में आप सही निर्णय नहीं ले पाएंगे लेकिन आप अपने शत्रुओं की पहचान आसानी से कर लिया करेंगे। चंद्रमा की यह स्थिति आपको कुछ अस्वस्थता तो देगी लेकिन आयु को लम्बी भी करेगी। आप अपने कर्जे को लेकर परेशान रह सकते हैं। हो सकता है कि आपको अपना कुछ कर्जे एक की बजाय दो बार चुकाने पड़ें।

चंद्रमा की यह स्थिति आपको कभीकभार किसी विशेष मामले में अपमानित भी करवा सकती है। लेकिन चन्द्रमा की यही स्थिति आपके बच्चों के लिए अनुकूल परिणाम दे सकती है। वे अपने जीवन काल में बहुत बड़ी उन्नति कर सकते हैं। आपके पिता के लिए भी यह स्थित शुभ परिणाम देगी और उन्हें किसी बड़े पद पर प्रतिष्ठित कराएगी।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में स्थित है, जो कि मंगल की शत्रु राशि है। मंगल छठे, पहले घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में ग्यारहवें घर में स्थित है। मंगलदृष्टि दूसरे, पांचवें, छठे घरावर आहे गुरु की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल आपको धैर्यवान बनाता है। यहां स्थित मंगल आपको खूब घूमने फिरने का मौका भी देता है। आप एक साहसी व्यक्ति हैं और अपने जीवन काल में खूब लाभ कमाएंगे। लेकिन आपमें क्रोध की अधिकता हो सकती है जिस पर नियंत्रण पाना जरी होगा। साथ ही आप कुछ हद तक कटुभाषी भी हो सकते हैं। अतः वाणी में मिठास और नियंत्रण भी जरी होगा।

मित्रों के सहयोग से आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर पाएंगे लेकिन मित्रों से आपका मतभेद और विरोध भी हो सकता है। हालांकि आपके मित्रों की संख्या कम होगी लेकिन जितने भी होंगे आपके लिए सहयोगी रहेंगे। आप गुरुजनों का बहुत सम्मान करते हैं। आपके स्वभाव में राजसी गुण भी पाए जाएंगे। अर्थात् आप अपने आपको किसी राजा की तरह ही समझेंगे।

पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है जैसे कि संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जसी स्थितियां भी आ सकती हैं। आपकी वाणी काफी कठोरता लिए हुए हो सकती है और आपके संस्कारों ने अनुमति दी तो आपकी रुचि मांसाहार में भी हो सकती है। आपके बड़े भाई बहन चिड़चिड़े लेकिन ऊर्जावान होंगे।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है, जो कि बुध की सम राशि है। बुध आठवें, ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। बुधदृष्टि सातवें घरावर आहे गुरु, शनि की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

आप सौम्य स्वभाव के और हमेशा खुश रहने वाले व्यक्ति हैं। आप शान्त चित्त और कुशाग्र बुद्धि हैं। आपकी हाजिरजबाबी, समझदारी और मित्रों के साथ किया गया सरल व्यवहार आपको प्रसंशनीय बनाएगा। बुध की यह स्थिति आपको उदारता और सदाचार का ज्ञान भी देती है। आप देखने आपकर्षक व्यक्तित्व के और दीर्घायु व्यक्ति हैं। आपको कई भाषाओं का ज्ञान हो सकता है।

आप किसी बात को बहुत जल्दी आत्मसात कर लेते हैं साथ ही आप एक अच्छे वक्ता भी हैं। आप कई विषयों में गहराई से अनुसंधान करेंगे, विशेषकर ज्योतिष, गणित, जादू या इंजीनियरिंग जैसे विषयों में आपकी गहरी रुचि हो सकती है। आप एक बड़े ही निपुण व्यवसायी व्यक्ति हैं। लेकिन यहां स्थिति बुध अशुभ दशाओं के आने पर स्नायु तंत्र और त्वचा से सम्बंधित रोग भी दे सकता है।

बुध की इस स्थिति के कारण आप अपने जन्म स्थान से दूर भी रह सकते हैं। आप अपने जीवन काल में कई विदेश यात्रा कर सकते हैं। जीवन के सत्ताइसवें साल में आप कोई धार्मिक यात्रा भी कर सकते हैं। गीतसंगीत के क्षेत्र में भी आपकी अच्छी खासी रुचि हो सकती है। बुध की यह स्थिति आपको वाणी, लेखन या प्रकाशन की क्षेत्र से जीविकोपार्जन करवा सकती है। आप सभी सुख सुविधाओं का प्राप्त करेंगे।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

गुरु विचार

आपकी कुण्डली में गुरु वृषभ राशि में स्थित है, जो कि गुरु की शत्रु राशि है। गुरु दूसरे, पांचवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। गुरुदृष्टि ग्यारहवें, पहले, तीसरे घरावर आहे सूर्य, बुध की पूर्ण दृष्टि गुरु पर है।

आप शारीरिक प से सुंदर और और आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं। लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होते हैं अर्थात आपके आकर्षण के कारण लोग आपसे मिलकर आपके वशीभूत हो जाते हैं। आपकी वाणी आकर्षक और प्रभावशाली होगी। आप कुशाग्र बुद्धि और विद्या सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप ज्योतिष काव्य साहित्य, कला प्रेमी और श्शास्त्र परिशीलन में आसक्त रहने वाले व्यक्ति हैं।

आप प्रतापी यशस्वी और प्रसिद्ध होंगे। लेकिन यहां स्थित बृहस्पति कभीकभी विपरीत लिंगी के प्रति अधिक आशक्ति देता है परंतु उनके प्रति लम्बे समय तक समर्पित रहना आपको पसंद नहीं होगा। फिर भी आपका जीवन साथी कुलीन और धनवान होना चाहिए। विवाह के कारण आपका भाग्योदय होगा और आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। आपका जीवन साथी गुणों से युक्त होगा।

सप्तम भाव का बृहस्पति कामुकता अधिक देता है। यहां स्थित कभीकभी अभिमानी भी बनाता है। अतः इन पर नियंत्रण भी आवश्यक होगा। आप शीघ्र ही बड़ी उन्नति और बड़ा पद प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकता है। आप न्याय के काम से भी धनार्जन कर सकते हैं।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की मित्र राशि है। शुक्र सातवें, बारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में तीसरे घर में स्थित है। शुक्रदृष्टि नौवें घरावर आहे गुरु की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

तीसरे भाव में शुक्र होने के कारण आप उत्साह से भरे रहेंगे। आप विनम्र, आनंदी और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। घूमना फिरना आपको बहुत पसंद होगा। आपकी वाणी मधुर होनी चाहिए। आपको कई कलाओं और कई भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। आप किसी पर आगे से हमला नहीं करते लेकिन अपनी सुरक्षा की चिंता आप हमेशा करते हैं। आप जो संकल्प लेते हैं उसमें सफल होते हैं।

आप कवि, गायक या चित्रकार हो सकते हैं। आप एक विद्वान व्यक्ति हैं। पढ़ने में आपकी अच्छी रुचि है। आप भाग्यवान और सम्पन्न व्यक्ति होंगे। आप धनधान्य से युक्त, निरोगी, प्रतापी और राजाओं या सरकार से जुड़े व्यक्तियों द्वारा पूज्य हो सकते हैं। उम्र के उनतीसवें वर्ष में आपको अच्छा धनलाभ होगा। आपके पर्याप्त संख्या में भाईबहन होते हैं लेकिन संतान की संख्या कम होती है।

आपको भाइयों मित्रों और पड़ोसियों से अच्छी मदद मिलती है। यात्राओं के खूब मौके मिलेंगे। आप किसी विभाग के प्रमुख हो सकते हैं। यदि कभी क्रोध आए तो उस पर नियंत्रण पाने की कोशिश करें और परेशानियों के समय अधिक निराश न हों। आपके विवाह में कुछ व्यवधान आ सकते हैं या वैवाहिक जीवन में कुछ विसंगतियां रह सकती हैं। हांलाकि विवाह के पश्चात ईमानदार रहने पर यह परेशानी कम होती है।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि वृषभ राशि में स्थित है, जो कि शनि की मित्र राशि है। शनि तीसरे, चौथे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। शनिदृष्टि नौवें, पहले, चौथे घरावर आहे सूर्य, बुध की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

यहां स्थित शनि व्यक्तिगत जीवन में अच्छे परिणाम नहीं देता है। जीवन साथी के शरीर का ऊपरी भाग बहुत सुंदर नहीं होता। विवाह से धन लाभ होता है। कभीकभी दो विवाह होने की सम्भावना भी बनती है। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होने की बात ज्योतिष शास्त्रों में कही गई है। लेकिन जीवन साथी का स्वभाव मनोनुकूल न होने की स्थिति में दाम्पत्य जीवन दुष्प्रभावी रहने की सम्भावना बनी रहती है। कभीकभी अविवाहित रहने की इच्छा भी करती है। संतान बिलम्ब से होती है।

ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुड़े कामों से लाभ मिल सकता है। किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेंट का काम करने से भी लाभ मिलता है। आप शिक्षक, प्रध्यापक, गणक आदि कामों से जुड़ कर भी आजीविका कमा सकते हैं। बाल्यावस्था में माता पिता को लेकर कुछ कष्ट उठाने पड़ सकते हैं। बावन, तिरपन साल की उम्र में जीवनसाथी को कष्ट हो सकता है।

यहां स्थित शनि के अशुभ प्रभावों की चर्चा करते हुए ज्योतिषीय ग्रंथों में कहा गया है कि संतान को कष्ट हो सकता है। मन अशान्त रह सकता है। दिलोदिमाग में एक अजीब सी घबराहट रह सकती है। समयसमय पर आने वाली आर्थिक समस्याएं विचलित कर सकती हैं। शरीर में आए दिन कोई न कोई रोग बना रह सकता है।

राहू विचार

आपकी कुण्डली में राहू मिथुन राशि में स्थित है। राहू आठवें घर में स्थित है। राहूदृष्टि बारहवें, दूसरे, चौथे घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि राहू पर है।

राहू के इस भाव में स्थित होने के कारण आप शरीर से मजबूत होंगे। आपको अपने जन्म स्थान में रहने का समय कम मिलेगा अर्थात आप अधिकांश समय विदेश में रह सकते हैं। आप राजाओ, सरकारी प्रतिनिधियों और पंडितों के आदरणीय होंगे। आप लोगों में माननीय और प्रशंसित होंगे। आप श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले व्यक्ति हैं। आपका भाग्योदय छब्बीस से छत्तीस वर्ष के बीच होगा।

राज्यपक्ष से आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति भी हो सकती है लेकिन कभीकभी बेकार में धन बर्बाद भी हो जाता है। हांलाकि आप धनवान होंगे। आपके पुत्र संतति की संख्या कम होगी। आपका बुढ़ापा बहुत सुखी रहेगा। यदि आपकी रुचि गाय पालने में होगी तो आपके पास पशुधन पर्याप्त मात्रा में होगा। आपको अपने जीवन से जुड़ी कई बातों का पूर्वानुमान हो जाएगा।

लेकिन यहां स्थित राहू कई प्रकार के अशुभफल भी देता है। जिसके कारण आप कुछ हद तक भीरु और आलसी भी हो सकते हैं। आप स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल हो सकते हैं। आप कुछ ऐसे कामों में भी लग सकते हैं जो धार्मिक या सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत अच्छे न माने गए हों। आपको पैत्रिक धन से वंचित रहना पड़ सकता है। आपको भाईबंधुओं से कष्ट मिल सकता है। आपके खर्चे अधिक होने के कारण आपको धन संचय में परेशानी रह सकती है।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु धनु राशि में स्थित है। केतु दूसरे घर में स्थित है। केतुदृष्टि छटे, आठवें, दसवें घरावर आहे मंगल,राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

इस भाव स्थित केतू आपको पवान बनाता है। सुफलों की श्रेणी में यह आपको सुखी और सम्पन्न भी बनाता है। ज्योतिषीय साहित्यों में कहा गया है कि यहां स्थित केतू आपको अत्यंत सुख देता है। आप अमित सुख के साथसाथ धन लाभ भी प्राप्त करते हैं। कई अवसरों पर यह आपको मधुर वचन वक्ता भी बनाता है। लेकिन अधिकांश मामलों में यहां स्थित केतू को अशुभफल देने वाला ही माना गया है। आप कुछ हद तक व्यग्रचित्त हो सकते हैं। कई मामलों में आपको भ्रमित भी देखा जा सकता है। कभीकभी आपको ऐसी अनुभूति होगी कि आपका भाग्य आपका साथ नहीं दे रहा है। मन संतापित रहता है।

कामों में व्यवधान आ सकते हैं। कई मामलों में आप धर्म के विरुद्ध जाते हुए पाए जाएंगे। आपको नीचों की संगति अधिक पसंद होगी। विद्या प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। आर्थिक समस्याएं बीचबीच में परेशान कर सकती हैं। व्यर्थ के खर्चे बने रहेंगे। राजपक्ष या सरकार से भय रहेगा। पैतृक सम्पत्ति मिलने में व्यवधान आएगा।

कोई मुख रोग परेशान कर सकता है अथवा वाणी में कोई दोष हो सकता है। आदर सत्कार का वचन निकालने में अरुचि हो सकती है। भाषण सम्भाषण में सरसता का अभाव रहेगा। परिवार में कलह रह सकती है। मित्रों से विरोध हो सकता है और व्यवसाय में घाटा हो सकता है। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर आचरण करें।

॥ शोडषवर्ग तालिका ॥

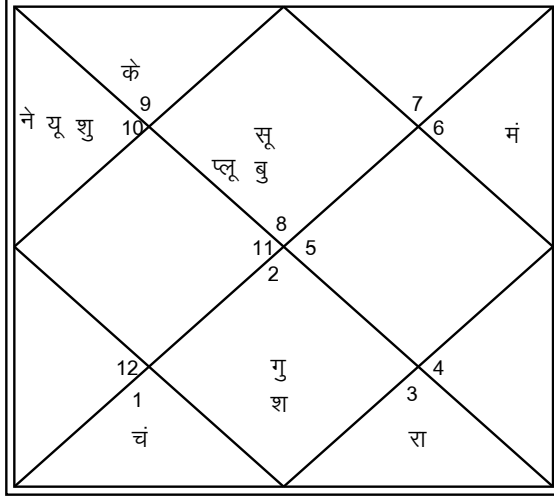
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	8	8	1	6	8	2	10	2	3	9	10	10	8
2	होरा	4	5	5	5	4	4	4	4	4	4	5	4	5
3	द्रेष्काण	8	4	1	2	12	6	10	2	11	5	6	2	12
4	चतुर्थांश	8	2	4	3	11	5	10	2	12	6	7	1	2
5	सप्तमांश	2	7	2	6	4	10	5	8	8	2	9	6	6
6	नवमांश	4	10	3	6	7	1	11	10	1	7	5	1	9
7	दशमांश	4	11	3	10	8	1	7	10	10	4	1	9	10
8	द्वादशांश	8	4	4	4	1	6	12	2	12	6	7	2	3
9	षोडशांश	6	4	5	11	11	10	4	6	9	9	1	6	3
10	विंशांश	10	11	6	10	5	4	4	10	8	8	4	8	9
11	चतुर्विंशांश	5	9	11	1	2	12	8	5	11	11	11	12	7
12	सप्तविंशांश	11	6	7	4	9	1	9	5	3	9	1	1	3
13	त्रिंशांश	2	10	11	8	12	6	6	2	3	3	10	6	12
14	खवेदांश	9	12	11	6	11	9	2	9	7	7	2	9	8
15	अक्षवेदांश	7	2	12	1	11	9	9	8	7	7	12	4	9
16	षष्ट्यंश	11	4	4	11	9	11	9	6	1	7	9	7	9

शोडषवर्ग भाव तालिका

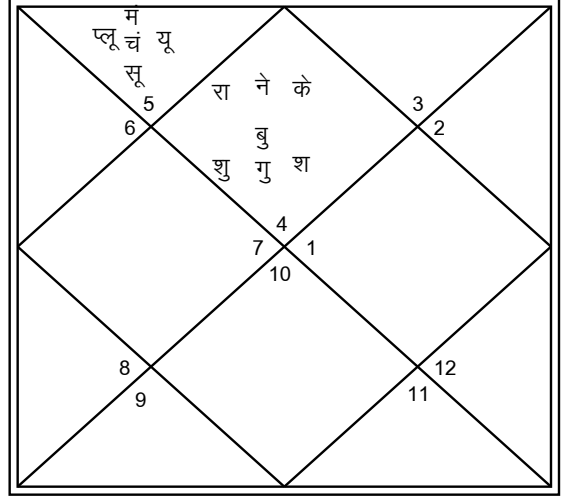
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	1	1	6	11	1	7	3	7	8	2	3	3	1
2	होरा	1	2	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2
3	द्रेष्काण	1	9	6	7	5	11	3	7	4	10	11	7	5
4	चतुर्थांश	1	7	9	8	4	10	3	7	5	11	12	6	7
5	सप्तमांश	1	6	1	5	3	9	4	7	7	1	8	5	5
6	नवमांश	1	7	12	3	4	10	8	7	10	4	2	10	6
7	दशमांश	1	8	12	7	5	10	4	7	7	1	10	6	7
8	द्वादशांश	1	9	9	9	6	11	5	7	5	11	12	7	8
9	षोडशांश	1	11	12	6	6	5	11	1	4	4	8	1	10
10	विंशांश	1	2	9	1	8	7	7	1	11	11	7	11	12
11	चतुर्विंशांश	1	5	7	9	10	8	4	1	7	7	7	8	3
12	सप्तविंशांश	1	8	9	6	11	3	11	7	5	11	3	3	5
13	त्रिंशांश	1	9	10	7	11	5	5	1	2	2	9	5	11
14	खवेदांश	1	4	3	10	3	1	6	1	11	11	6	1	12
15	अक्षवेदांश	1	8	6	7	5	3	3	2	1	1	6	10	3
16	षष्ट्यंश	1	6	6	1	11	1	11	8	3	9	11	9	11

॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

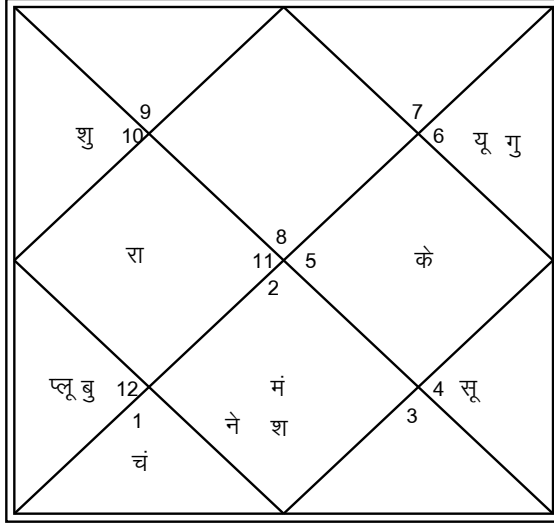
लग्न चक्र



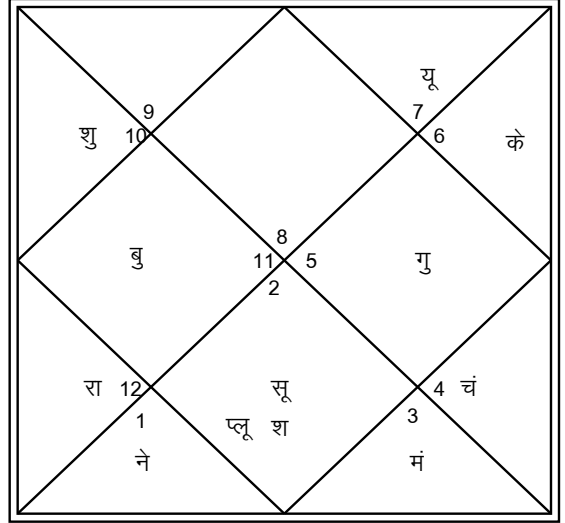
होरा-धन-सम्पत्ति



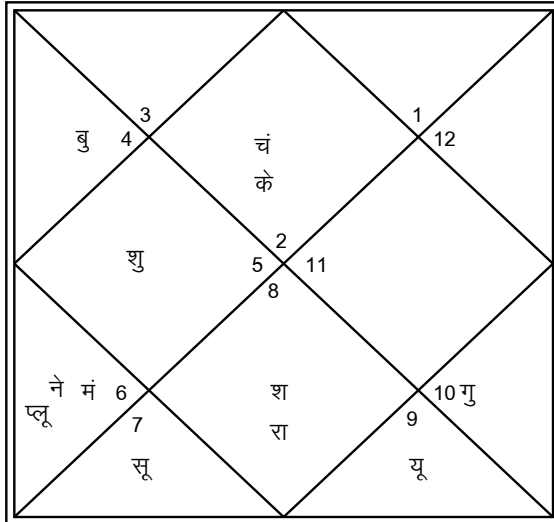
द्रेष्काण-भाई-बहन



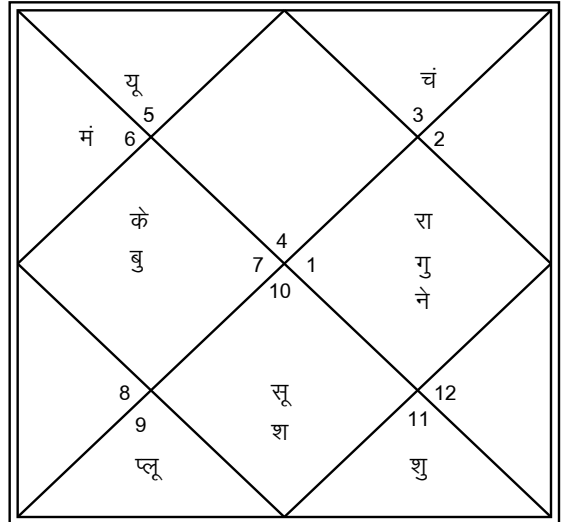
चतुर्थाश-भाग्य



सप्तमांश-बच्चे

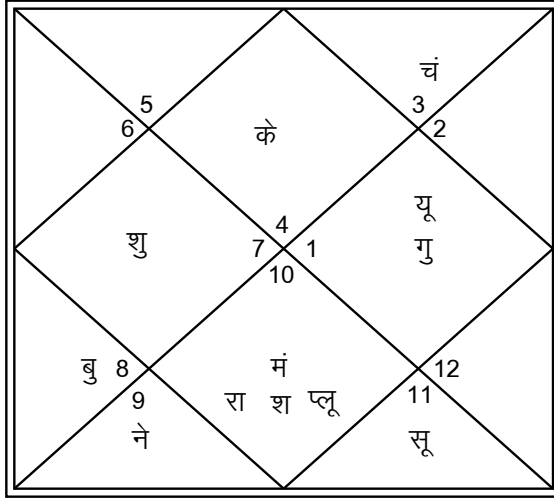


नवमांश-पति-पत्नी

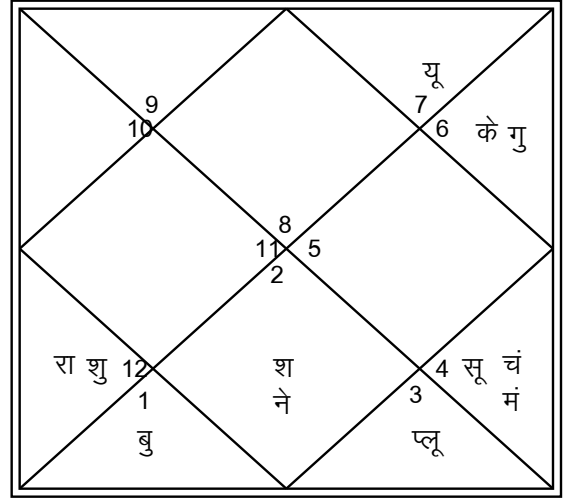


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

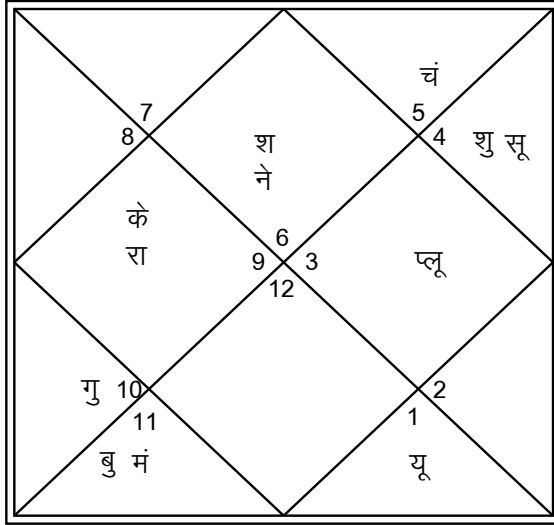
दशमांश—व्यवसाय



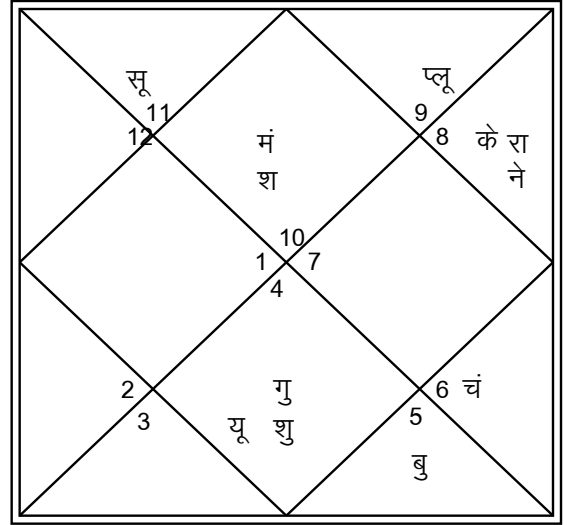
द्वादशांश—माता—पिता



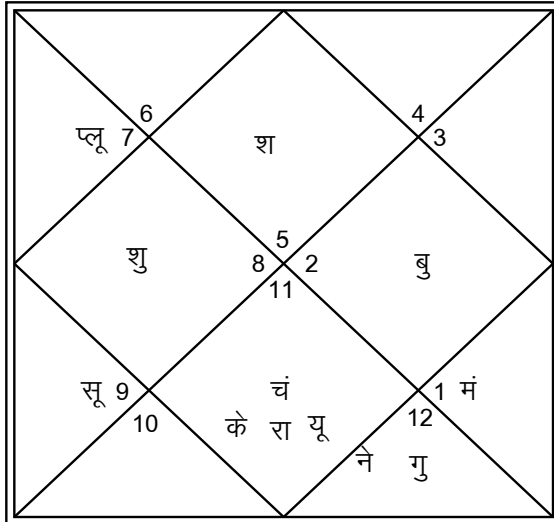
षोडशांश—वाहन



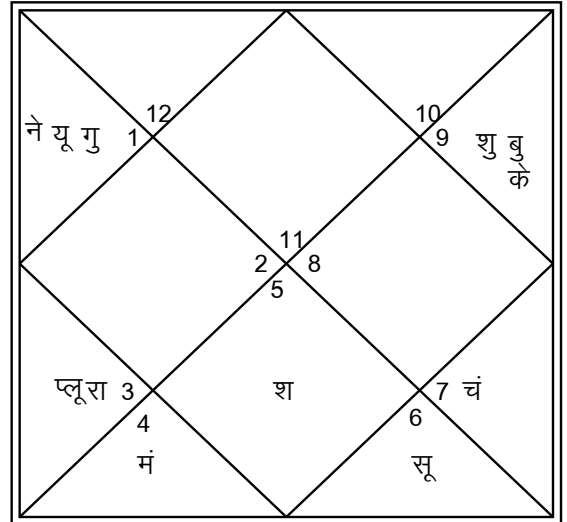
विंशांश—धार्मिक रुचि



सप्तविंशांश—बल

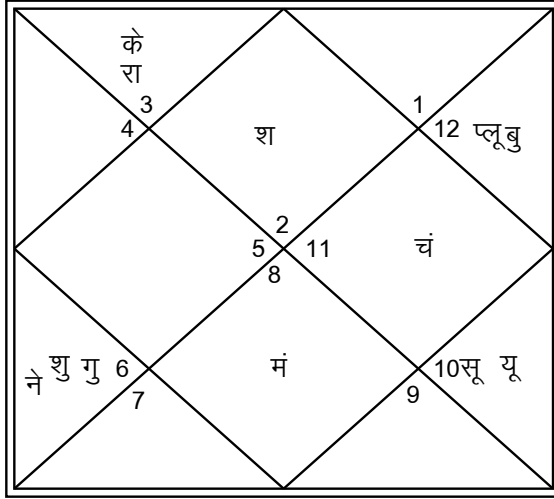


चतुर्विंशांश—शिक्षा

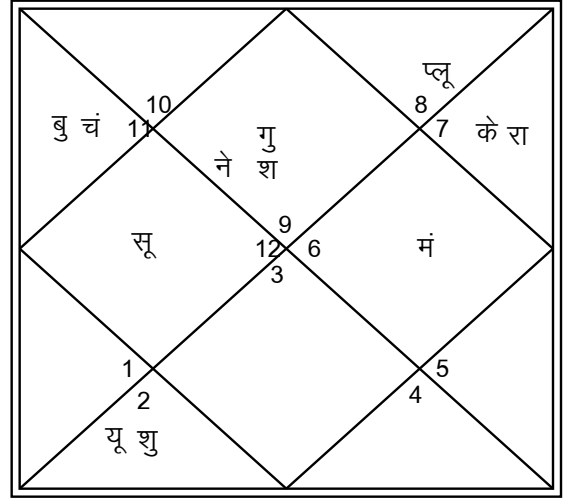


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

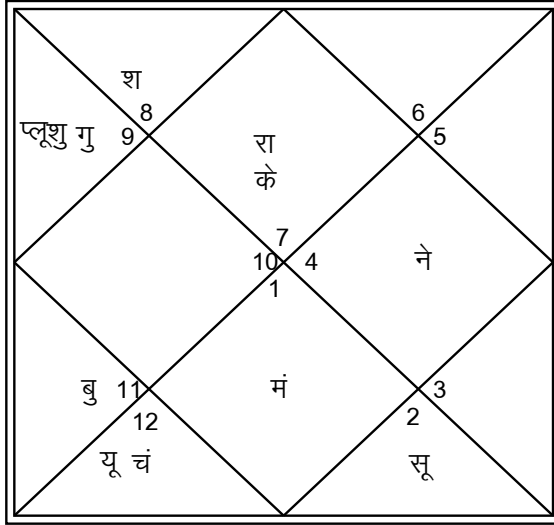
त्रिंशंश-दुर्भाग्य



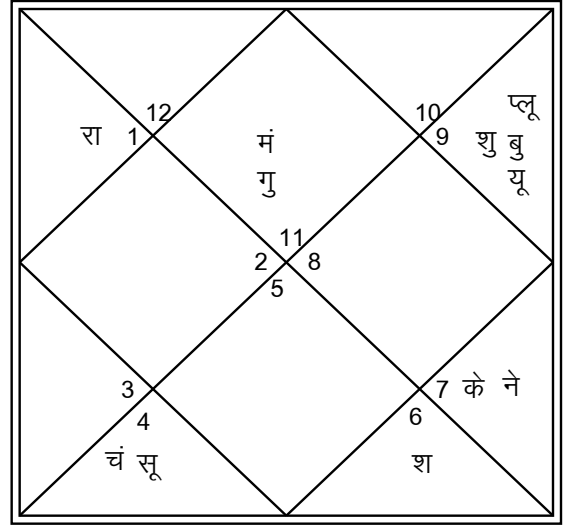
खवेदांश-शुभ फल



अक्षवेदांश-सामान्य जीवन



षष्ट्यंश-सामान्य जीवन



एस्ट्रोसेज
शॉप

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी



परामर्श



दशा भोग्य: KET 3 Y 0 M 11 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

केतु — गुरु 8/12/00 से 26/10/01		केतु — शनि 26/10/01 से 5/12/02		केतु — बुध 5/12/02 से 2/12/03		शुक्र — शुक्र 2/12/03 से 2/4/07		शुक्र — सूर्य 2/4/07 से 2/4/08	
गुरु	5/1/01	शनि	29/12/01	बुध	26/1/03	शुक्र	22/6/04	सूर्य	20/4/07
शनि	28/2/01	बुध	26/2/02	केतु	17/2/03	सूर्य	22/8/04	चंद्र	20/5/07
बुध	16/4/01	केतु	19/3/02	शुक्र	16/4/03	चंद्र	2/12/04	मंगल	11/6/07
केतु	5/5/01	शुक्र	26/5/02	सूर्य	4/5/03	मंगल	12/2/05	राहु	5/8/07
शुक्र	1/7/01	सूर्य	16/6/02	चंद्र	4/6/03	राहु	12/8/05	गुरु	23/9/07
सूर्य	18/7/01	चंद्र	19/7/02	मंगल	25/6/03	गुरु	22/1/06	शनि	20/11/07
चंद्र	16/8/01	मंगल	12/8/02	राहु	18/8/03	शनि	2/8/06	बुध	11/1/08
मंगल	6/9/01	राहु	12/10/02	गुरु	6/10/03	बुध	22/1/07	केतु	2/2/08
राहु	26/10/01	गुरु	5/12/02	शनि	2/12/03	केतु	2/4/07	शुक्र	2/4/08

शुक्र — चंद्र 2/4/08 से 2/12/09		शुक्र — मंगल 2/12/09 से 2/2/11		शुक्र — राहु 2/2/11 से 2/2/14		शुक्र — गुरु 2/2/14 से 2/10/16		शुक्र — शनि 2/10/16 से 2/12/19	
चंद्र	22/5/08	मंगल	27/12/09	राहु	14/7/11	गुरु	10/6/14	शनि	3/4/17
मंगल	27/6/08	राहु	2/3/10	गुरु	8/12/11	शनि	12/11/14	बुध	14/9/17
राहु	27/9/08	गुरु	26/4/10	शनि	29/5/12	बुध	28/3/15	केतु	21/11/17
गुरु	17/12/08	शनि	2/7/10	बुध	2/11/12	केतु	24/5/15	शुक्र	1/6/18
शनि	22/3/09	बुध	2/9/10	केतु	5/1/13	शुक्र	4/11/15	सूर्य	28/7/18
बुध	17/6/09	केतु	26/9/10	शुक्र	5/7/13	सूर्य	22/12/15	चंद्र	3/11/18
केतु	22/7/09	शुक्र	6/12/10	सूर्य	29/8/13	चंद्र	12/3/16	मंगल	9/1/19
शुक्र	2/11/09	सूर्य	27/12/10	चंद्र	29/11/13	मंगल	8/5/16	राहु	30/6/19
सूर्य	2/12/09	चंद्र	2/2/11	मंगल	2/2/14	राहु	2/10/16	गुरु	2/12/19

शुक्र — बुध 2/12/19 से 2/10/22		शुक्र — केतु 2/10/22 से 2/12/23		सूर्य — सूर्य 2/12/23 से 20/3/24		सूर्य — चंद्र 20/3/24 से 20/9/24		सूर्य — मंगल 20/9/24 से 26/1/25	
बुध	27/4/20	केतु	27/10/22	सूर्य	8/12/23	चंद्र	5/4/24	मंगल	28/9/24
केतु	26/6/20	शुक्र	7/1/23	चंद्र	17/12/23	मंगल	16/4/24	राहु	17/10/24
शुक्र	16/12/20	सूर्य	28/1/23	मंगल	23/12/23	राहु	13/5/24	गुरु	3/11/24
सूर्य	7/2/21	चंद्र	3/3/23	राहु	9/1/24	गुरु	7/6/24	शनि	23/11/24
चंद्र	2/5/21	मंगल	27/3/23	गुरु	24/1/24	शनि	5/7/24	बुध	11/12/24
मंगल	2/7/21	राहु	30/5/23	शनि	11/2/24	बुध	1/8/24	केतु	18/12/24
राहु	5/12/21	गुरु	26/7/23	बुध	26/2/24	केतु	11/8/24	शुक्र	9/1/25
गुरु	21/4/22	शनि	3/10/23	केतु	2/3/24	शुक्र	11/9/24	सूर्य	16/1/25
शनि	2/10/22	बुध	2/12/23	शुक्र	20/3/24	सूर्य	20/9/24	चंद्र	26/1/25

दशा भोग्य: KET 3 Y 0 M 11 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

सूर्य — राहु 26/ 1/25 से 20/12/25		सूर्य — गुरु 20/12/25 से 8/10/26		सूर्य — शनि 8/10/26 से 20/ 9/27		सूर्य — बुध 20/ 9/27 से 26/ 7/28		सूर्य — केतु 26/ 7/28 से 2/12/28	
राहु	15/3/25	गुरु	29/1/26	शनि	2/12/26	बुध	4/11/27	केतु	4/8/28
गुरु	28/4/25	शनि	14/3/26	बुध	21/1/27	केतु	21/11/27	शुक्र	25/8/28
शनि	19/6/25	बुध	25/4/26	केतु	11/2/27	शुक्र	12/1/28	सूर्य	1/9/28
बुध	5/8/25	केतु	12/5/26	शुक्र	8/4/27	सूर्य	28/1/28	चंद्र	11/9/28
केतु	24/8/25	शुक्र	30/6/26	सूर्य	25/4/27	चंद्र	23/2/28	मंगल	19/9/28
शुक्र	18/10/25	सूर्य	14/7/26	चंद्र	23/5/27	मंगल	11/3/28	राहु	8/10/28
सूर्य	4/11/25	चंद्र	8/8/26	मंगल	13/6/27	राहु	27/4/28	गुरु	24/10/28
चंद्र	1/12/25	मंगल	25/8/26	राहु	5/8/27	गुरु	8/6/28	शनि	14/11/28
मंगल	20/12/25	राहु	8/10/26	गुरु	20/9/27	शनि	26/7/28	बुध	2/12/28

सूर्य — शुक्र 2/12/28 से 2/12/29		चंद्र — चंद्र 2/12/29 से 2/10/30		चंद्र — मंगल 2/10/30 से 2/ 5/31		चंद्र — राहु 2/ 5/31 से 2/11/32		चंद्र — गुरु 2/11/32 से 2/ 3/34	
शुक्र	2/2/29	चंद्र	27/12/29	मंगल	15/10/30	राहु	23/7/31	गुरु	6/1/33
सूर्य	20/2/29	मंगल	15/1/30	राहु	16/11/30	गुरु	5/10/31	शनि	22/3/33
चंद्र	20/3/29	राहु	2/3/30	गुरु	14/12/30	शनि	1/1/32	बुध	30/5/33
मंगल	11/4/29	गुरु	10/4/30	शनि	17/1/31	बुध	17/3/32	केतु	28/6/33
राहु	5/6/29	शनि	27/5/30	बुध	17/2/31	केतु	19/4/32	शुक्र	18/9/33
गुरु	23/7/29	बुध	10/7/30	केतु	1/3/31	शुक्र	19/7/32	सूर्य	12/10/33
शनि	20/9/29	केतु	27/7/30	शुक्र	4/4/31	सूर्य	16/8/32	चंद्र	22/11/33
बुध	11/11/29	शुक्र	17/9/30	सूर्य	15/4/31	चंद्र	1/10/32	मंगल	20/12/33
केतु	2/12/29	सूर्य	2/10/30	चंद्र	2/5/31	मंगल	2/11/32	राहु	2/3/34

चंद्र — शनि 2/ 3/34 से 2/10/35		चंद्र — बुध 2/10/35 से 2/ 3/37		चंद्र — केतु 2/ 3/37 से 2/10/37		चंद्र — शुक्र 2/10/37 से 2/ 6/39		चंद्र — सूर्य 2/ 6/39 से 2/12/39	
शनि	3/6/34	बुध	15/12/35	केतु	15/3/37	शुक्र	12/1/38	सूर्य	11/6/39
बुध	23/8/34	केतु	14/1/36	शुक्र	20/4/37	सूर्य	12/2/38	चंद्र	26/6/39
केतु	27/9/34	शुक्र	9/4/36	सूर्य	30/4/37	चंद्र	2/4/38	मंगल	7/7/39
शुक्र	2/1/35	सूर्य	5/5/36	चंद्र	18/5/37	मंगल	7/5/38	राहु	4/8/39
सूर्य	30/1/35	चंद्र	17/6/36	मंगल	30/5/37	राहु	7/8/38	गुरु	28/8/39
चंद्र	18/3/35	मंगल	17/7/36	राहु	1/7/37	गुरु	27/10/38	शनि	26/9/39
मंगल	21/4/35	राहु	4/10/36	गुरु	29/7/37	शनि	2/2/39	बुध	22/10/39
राहु	16/7/35	गुरु	12/12/36	शनि	3/9/37	बुध	27/4/39	केतु	2/11/39
गुरु	2/10/35	शनि	2/3/37	बुध	2/10/37	केतु	2/6/39	शुक्र	2/12/39

दशा भोग्य: KET 3 Y 0 M 11 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

मंगल — मंगल 2/12/39 से 29/4/40		मंगल — राहु 29/4/40 से 17/5/41		मंगल — गुरु 17/5/41 से 23/4/42		मंगल — शनि 23/4/42 से 2/6/43		मंगल — बुध 2/6/43 से 29/5/44	
मंगल	11/12/39	राहु	26/6/40	गुरु	2/7/41	शनि	26/6/42	बुध	23/7/43
राहु	3/1/40	गुरु	16/8/40	शनि	25/8/41	बुध	23/8/42	केतु	14/8/43
गुरु	22/1/40	शनि	16/10/40	बुध	13/10/41	केतु	16/9/42	शुक्र	13/10/43
शनि	16/2/40	बुध	10/12/40	केतु	2/11/41	शुक्र	23/11/42	सूर्य	1/11/43
बुध	7/3/40	केतु	2/1/41	शुक्र	28/12/41	सूर्य	13/12/42	चंद्र	1/12/43
केतु	15/3/40	शुक्र	5/3/41	सूर्य	15/1/42	चंद्र	16/1/43	मंगल	22/12/43
शुक्र	10/4/40	सूर्य	24/3/41	चंद्र	13/2/42	मंगल	9/2/43	राहु	15/2/44
सूर्य	17/4/40	चंद्र	25/4/41	मंगल	3/3/42	राहु	9/4/43	गुरु	3/4/44
चंद्र	29/4/40	मंगल	17/5/41	राहु	23/4/42	गुरु	2/6/43	शनि	29/5/44

मंगल — केतु 29/5/44 से 26/10/44		मंगल — शुक्र 26/10/44 से 26/12/45		मंगल — सूर्य 26/12/45 से 2/5/46		मंगल — चंद्र 2/5/46 से 2/12/46		राहु — राहु 2/12/46 से 14/8/49	
केतु	8/6/44	शुक्र	6/1/45	सूर्य	3/1/46	चंद्र	20/5/46	राहु	28/4/47
शुक्र	2/7/44	सूर्य	27/1/45	चंद्र	13/1/46	मंगल	2/6/46	गुरु	8/9/47
सूर्य	10/7/44	चंद्र	2/3/45	मंगल	20/1/46	राहु	4/7/46	शनि	12/2/48
चंद्र	22/7/44	मंगल	27/3/45	राहु	9/2/46	गुरु	2/8/46	बुध	29/6/48
मंगल	1/8/44	राहु	30/5/45	गुरु	26/2/46	शनि	5/9/46	केतु	26/8/48
राहु	23/8/44	गुरु	26/7/45	शनि	16/3/46	बुध	5/10/46	शुक्र	8/2/49
गुरु	12/9/44	शनि	2/10/45	बुध	4/4/46	केतु	17/10/46	सूर्य	27/3/49
शनि	5/10/44	बुध	2/12/45	केतु	11/4/46	शुक्र	22/11/46	चंद्र	18/6/49
बुध	26/10/44	केतु	26/12/45	शुक्र	2/5/46	सूर्य	2/12/46	मंगल	14/8/49

राहु — गुरु 14/8/49 से 8/1/52		राहु — शनि 8/1/52 से 14/11/54		राहु — बुध 14/11/54 से 2/6/57		राहु — केतु 2/6/57 से 20/6/58		राहु — शुक्र 20/6/58 से 20/6/61	
गुरु	9/12/49	शनि	21/6/52	बुध	24/3/55	केतु	24/6/57	शुक्र	20/12/58
शनि	26/4/50	बुध	16/11/52	केतु	18/5/55	शुक्र	27/8/57	सूर्य	14/2/59
बुध	29/8/50	केतु	16/1/53	शुक्र	21/10/55	सूर्य	16/9/57	चंद्र	14/5/59
केतु	19/10/50	शुक्र	7/7/53	सूर्य	7/12/55	चंद्र	18/10/57	मंगल	17/7/59
शुक्र	13/3/51	सूर्य	28/8/53	चंद्र	23/2/56	मंगल	10/11/57	राहु	29/12/59
सूर्य	26/4/51	चंद्र	24/11/53	मंगल	17/4/56	राहु	6/1/58	गुरु	23/5/60
चंद्र	8/7/51	मंगल	24/1/54	राहु	5/9/56	गुरु	27/2/58	शनि	14/11/60
मंगल	29/8/51	राहु	27/6/54	गुरु	7/1/57	शनि	27/4/58	बुध	17/4/61
राहु	8/1/52	गुरु	14/11/54	शनि	2/6/57	बुध	20/6/58	केतु	20/6/61

दशा भोग्य: KET 3 Y 0 M 11 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

राहु — सूर्य 20/ 6/61 से 14/ 5/62		राहु — चंद्र 14/ 5/62 से 14/11/63		राहु — मंगल 14/11/63 से 2/12/64		गुरु — गुरु 2/12/64 से 20/ 1/67		गुरु — शनि 20/ 1/67 से 2/ 8/69	
सूर्य	6/ 7/61	चंद्र	29/ 6/62	मंगल	6/12/63	गुरु	15/ 3/65	शनि	15/ 6/67
चंद्र	3/ 8/61	मंगल	1/ 8/62	राहु	3/ 2/64	शनि	16/ 7/65	बुध	24/10/67
मंगल	22/ 8/61	राहु	22/10/62	गुरु	23/ 3/64	बुध	5/11/65	केतु	17/12/67
राहु	11/10/61	गुरु	4/ 1/63	शनि	23/ 5/64	केतु	20/12/65	शुक्र	19/ 5/68
गुरु	24/11/61	शनि	29/ 3/63	बुध	17/ 7/64	शुक्र	28/ 4/66	सूर्य	5/ 7/68
शनि	15/ 1/62	बुध	16/ 6/63	केतु	9/ 8/64	सूर्य	6/ 6/66	चंद्र	21/ 9/68
बुध	1/ 3/62	केतु	17/ 7/63	शुक्र	12/10/64	चंद्र	10/ 8/66	मंगल	14/11/68
केतु	20/ 3/62	शुक्र	17/10/63	सूर्य	1/11/64	मंगल	25/ 9/66	राहु	1/ 4/69
शुक्र	14/ 5/62	सूर्य	14/11/63	चंद्र	2/12/64	राहु	20/ 1/67	गुरु	2/ 8/69

गुरु — बुध 2/ 8/69 से 8/11/71		गुरु — केतु 8/11/71 से 14/10/72		गुरु — शुक्र 14/10/72 से 14/ 6/75		गुरु — सूर्य 14/ 6/75 से 2/ 4/76		गुरु — चंद्र 2/ 4/76 से 2/ 8/77	
बुध	28/11/69	केतु	28/11/71	शुक्र	24/ 3/73	सूर्य	29/ 6/75	चंद्र	12/ 5/76
केतु	15/ 1/70	शुक्र	24/ 1/72	सूर्य	12/ 5/73	चंद्र	23/ 7/75	मंगल	10/ 6/76
शुक्र	1/ 6/70	सूर्य	11/ 2/72	चंद्र	2/ 8/73	मंगल	9/ 8/75	राहु	22/ 8/76
सूर्य	12/ 7/70	चंद्र	9/ 3/72	मंगल	28/ 9/73	राहु	23/ 9/75	गुरु	26/10/76
चंद्र	20/ 9/70	मंगल	28/ 3/72	राहु	22/ 2/74	गुरु	1/11/75	शनि	12/ 1/77
मंगल	8/11/70	राहु	19/ 5/72	गुरु	30/ 6/74	शनि	17/12/75	बुध	20/ 3/77
राहु	10/ 3/71	गुरु	3/ 7/72	शनि	2/12/74	बुध	27/ 1/76	केतु	18/ 4/77
गुरु	29/ 6/71	शनि	27/ 8/72	बुध	18/ 4/75	केतु	14/ 2/76	शुक्र	8/ 7/77
शनि	8/11/71	बुध	14/10/72	केतु	14/ 6/75	शुक्र	2/ 4/76	सूर्य	2/ 8/77

गुरु — मंगल 2/ 8/77 से 8/ 7/78		गुरु — राहु 8/ 7/78 से 2/12/80	
मंगल	22/ 8/77	राहु	18/11/78
राहु	12/10/77	गुरु	13/ 3/79
गुरु	27/11/77	शनि	30/ 7/79
शनि	20/ 1/78	बुध	2/12/79
बुध	8/ 3/78	केतु	23/ 1/80
केतु	27/ 3/78	शुक्र	17/ 6/80
शुक्र	23/ 5/78	सूर्य	30/ 7/80
सूर्य	10/ 6/78	चंद्र	12/10/80
चंद्र	8/ 7/78	मंगल	2/12/80

॥ मैत्री चक्र ॥

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	...	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अतिशत्रु
चंद्र	सम	...	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	अतिमित्र	सम	...	सम	सम	शत्रु	शत्रु
बुध	सम	अतिशत्रु	मित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	...	अतिशत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	...	सम
शनि	अतिशत्रु	सम	अतिशत्रु	सम	शत्रु	सम	...

॥ षड्बल एवं भावबल तालिका ॥

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते हैं तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	14.11	51.52	19.61	40.81	41.98	32.9	4.06
सप्तवर्गज बल	78.75	82.5	86.25	63.75	41.25	63.75	69.38
ओजयुग्मरस्यांश बल	0	0	0	15	15	15	0
केन्द्र बल	60	15	30	60	60	15	60
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	152.86	149.02	135.86	194.56	158.23	126.65	133.43
कुल दिग्बल	25.33	40.26	43.84	56.45	3	49.12	59.92
नतोन्त बल	26.38	33.62	33.62	60	26.38	26.38	33.62
पक्ष बल	14.93	45.07	14.93	14.93	45.07	45.07	14.93
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	1.99	14.76	19.76	57.13	56.79	4.12	5.51
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	43.3	123.45	188.3	132.06	233.25	75.58	69.05
कुल चेष्टा बल	4.6	45.07	22.37	14.68	57.09	30.85	54.83
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	7.31	-7.59	24.19	9.75	-30.09	-13.38	-21.11
कुल षड्बल	293.4	401.63	431.71	433.24	455.74	311.67	304.7
षड्बल (रूपस)	4.89	6.69	7.2	7.22	7.6	5.19	5.08
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	0.98	1.12	1.44	1.03	1.17	0.94	1.02
सापेक्षिक क्रम	6	3	1	4	2	7	5

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	431.71	455.74	304.7	304.7	455.74	431.71	311.67	433.24	401.63	293.4	433.24	311.67
भाव दिग्बल	0	50	10	30	50	20	30	10	10	60	40	50
भावदृष्टि बल	38.9	39.8	1.91	-20.76	-41.15	-16.34	-49.88	-65.9	-22.8	27.55	28.45	53.13
कुल भाव बल	470.61	545.54	316.61	313.94	464.59	435.37	291.79	377.34	388.83	380.96	501.69	414.8
कुल भाव बल (रूपस में)	7.84	9.09	5.28	5.23	7.74	7.26	4.86	6.29	6.48	6.35	8.36	6.91
सापेक्षिक क्रम	3	1	10	11	4	5	12	9	7	8	2	6

॥ ग्रह दृष्टि (पाश्चात्य) ॥

	सूर्य 232 26	चंद्र 7 39	मंगल 176 55	बुध 222 39	गुरु 41 0	शुक्र 275 48	शनि 32 15	राहु 83 10	केतु 263 10	अरुण 293 57	वरुण 280 43	यम 229 1
सूर्य 232. 26	तृती 2.24
चंद्र 7. 39	सप्त 2.85
मंगल 176. 55	तृती 0.75	अर्धद्वितीय 0.27	चतुर्थ 1.12	पंच 1.51
बुध 222. 39	युति 3.48	नवां 0.48	पंचा 0.3	तृती 2.04	युति 5.75
गुरु 41. 0	सप्त 2.39	..	अष्टा 0.09	सप्त 8.91	सप्त 4.66
शुक्र 275. 48	युति 6.72	..
शनि 32. 15	सप्त 3.07	युति 4.16
राहु 83. 10	पष्ठ 0.26	..	चतुर्थ 1.12	सप्त 1.58	सप्त 10.0
केतु 263. 10	युति 1.58
अरुण 293. 57
वरुण 280. 43	युति 1.18
यम 229. 1	युति 7.73	तृती 0.53

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	पष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. ग्रहों के नाम के नीचे ग्रहों के अंश व कला दिए गए हैं।

4. एप्पलाइंग दृष्टि के लिए बाएं से ऊपर देखें और सेपरेटिंग दृष्टि के लिए ऊपर से बाएं देखें।

॥ भावमध्य पर दृष्टि ॥

	1 212 0	2 244 8	3 276 17	4 308 26	5 336 17	6 4 8	7 32 0	8 64 8	9 96 17	10 128 26	11 156 17	12 184 8
सूर्य 232. 26	..	युति 2.19
चंद्र 7. 39	तृती 1.25	चतुर्थ 2.32	पंच 2.61	..	सप्त 7.66
मंगल 176. 55	युति 5.19
बुध 222. 39	चतुर्थ 0.89
गुरु 41. 0	सप्त 3.99	तृती 0.64	चतुर्थ 1.71	पंच 0.64	..
शुक्र 275. 48	युति 9.67	..	तृती 2.76
शनि 32. 15	सप्त 9.83	तृती 0.98	..	पंच 0.98	..
राहु 83. 10	सप्त 1.26	युति 1.26	अर्धद्वितीय 0.74
केतु 263. 10	युति 1.26	अर्धद्वितीय 0.74
अरुण 293. 57	युति 0.35
वरुण 280. 43	तृती 0.78
यम 229. 1

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. चलित चक्र की भावमध्य अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की भाव मध्य पर एप्पलाइड दिखाई गई है।

॥ केपी संधि पर दृष्टि ॥

	1 212 0	2 241 53	3 274 27	4 308 26	5 340 27	6 8 9	7 32 0	8 61 53	9 94 27	10 128 26	11 160 27	12 188 9
सूर्य 232. 26	..	युति 3.69
चंद्र 7. 39	युति 9.66	..	तृती 0.12	चतुर्थ 1.4	पंच 2.61	..	सप्त 9.66
मंगल 176. 55	..	तृती 0.52	युति 2.51
बुध 222. 39	चतुर्थ 0.89	पंच 1.9
गुरु 41. 0	सप्त 3.99	चतुर्थ 1.71	पंच 2.72	..
शुक्र 275. 48	तृती 0.67
शनि 32. 15	सप्त 9.83	तृती 1.9
राहु 83. 10	सप्त 2.48	युति 2.48	अर्धद्वितीय 0.74
केतु 263. 10	युति 2.48	अर्धद्वितीय 0.74
अरुण 293. 57	युति 0.35
वरुण 280. 43	तृती 2.87
यम 229. 1	..	युति 1.42	अर्धद्वितीय 0.57

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

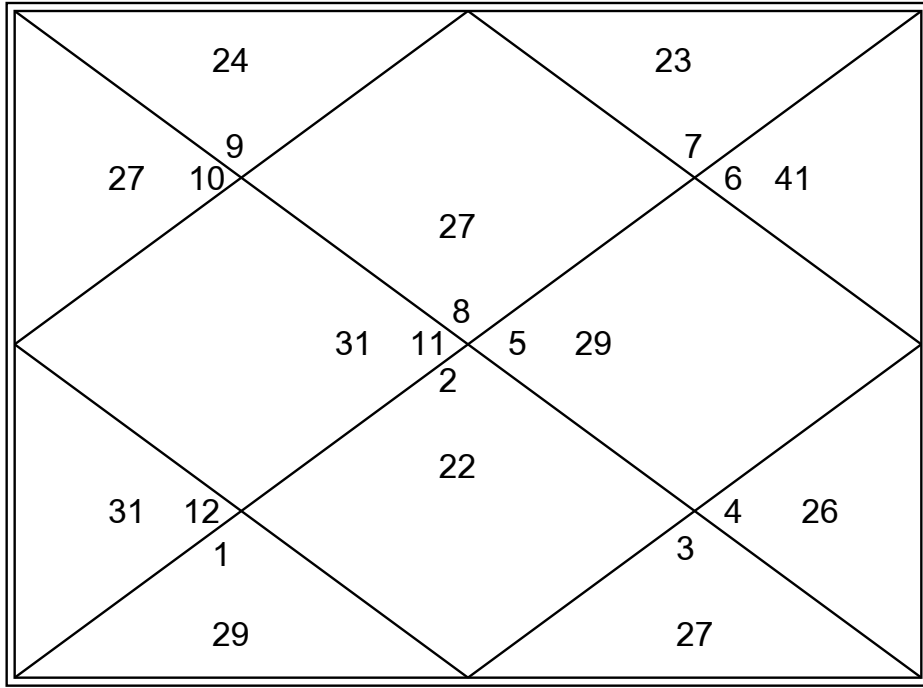
3. निरयन भाव चलित (केपी चक्र) के भाव प्रारम्भ अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की केपी भाव प्रारम्भ पर एप्पलाइड दृष्टि दिखाई गई है।

॥ अष्टकवर्ग तालिका ॥

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	3	5	4	4	6	4	2	4	5	4	4
चन्द्र	5	5	4	3	4	6	4	4	1	5	4	4
मंगल	5	1	3	1	4	5	2	3	3	4	3	5
बुध	6	4	3	4	4	6	4	5	4	4	4	6
गुरु	4	5	4	6	5	6	4	5	6	1	6	4
शुक्र	3	3	3	5	4	6	2	4	4	6	6	6
शनि	3	1	5	3	4	6	3	4	2	2	4	2
योग	29	22	27	26	29	41	23	27	24	27	31	31

अष्टकवर्ग चार्ट:



॥ प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ॥

सूर्य

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
राहू	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
योग	3	3	5	4	4	6	4	2	4	5	4	4	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
चन्द्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
राहू	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
योग	5	5	4	3	4	6	4	4	1	5	4	4	

मंगल

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	5
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
राहू	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
योग	5	1	3	1	4	5	2	3	3	4	3	5	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	5
चन्द्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
राहू	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
योग	6	4	3	4	4	6	4	5	4	4	4	6	

गुरु

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
राहू	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
योग	4	5	4	6	5	6	4	5	6	1	6	4	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
चन्द्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
राहू	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
योग	3	3	3	5	4	6	2	4	4	6	6	6	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
राहू	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
योग	3	1	5	3	4	6	3	4	2	2	4	2	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).